Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

स्वामी श्रद्धानन्द की डायरी से

संग्रहकर्ता

चतुरसेन गुप्त
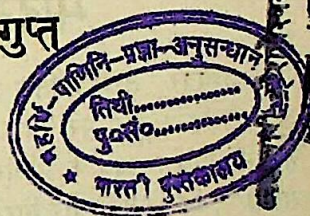
प्रकाशक :—

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड,

दरियागंज, दिल्ली—७

मुद्रक :—

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज,

पाटौदी हाउस, दिल्ली-७

सृष्ट्यब्द १९७२९४९०६२

प्रथमवार ३०००

दयानन्दाब्द १३७

विक्रमी सम्वत् २०१८

मूल्य ४० न० पैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा

ऋषि दयानन्द के चरणों में

सादर समर्पण

ऋषिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पट पर अब तक ज्यों की त्यों अङ्कित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है। परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है ?—परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया······।

भगवन् ! मैं तुम्हारा ऋणी हूं; उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। इसलिए जिस परम पिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।

विनीत—

२६—८—८१ वि०] ——श्रद्धानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

विनम्र निवेदन

अमर हुतात्मा श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान ४ पौष सम्वत् १९८३ विक्रमी ता० २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली में हुआ था। इस दिन से ठीक दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय श्री स्वामी जी महाराज ने **अपनी जीवन यात्रा** लिख कर निम्न शब्दों में समाप्त की थी—

"मेरे पुराने साथी प्रायः सब चल बसे हैं। आर्य समाज में प्रवेश काल के नये साथियों में भी बहुत ह्रास हो चुका है। मुझे भी मौत सिर पर खड़ी दिखाई देती है।"

आगे चल कर फिर स्वामी जी लिखते हैं—

"इसमें सन्देह नहीं कि मेरी गिरावट की कहानियां बहुत से श्रद्धालु हृदयों को ठेस लगायंगी परन्तु मुझे विश्वास है कि इस आत्म-कथा के पाठ से बहुत से युवकों को संसार-यात्रा में ठोकरों से बचने की शक्ति भी मिलेगी।"

श्री स्वामी जी महाराज ने एक स्थान पर यह भी लिखा कि–

"मुझे विद्यार्थी जीवन व्यतीत करते हुए ही आत्म-चिन्तन का व्यसन सा लग गया था और इस लिए "दिन-पत्रिका" (डायरी) रखने का अभ्यास था। उस दिन-पत्रिका से......।"

उसी दिन-पत्रिका (डायरी) के आधार पर श्री स्वामी जी महाराज ने अपनी आत्म-कथा लिखकर ३७ वर्ष पूर्व प्रकाशित कराई थी। आज वह ग्रन्थ अप्राप्य है, कितना महत्वपूर्ण ग्रन्थ वह होगा, यह आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

सार्वदेशिक प्रकाशन की ओर से इस ग्रन्थ के प्रकाशित करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रबन्ध किया जा रहा है। किन्तु उस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के दिग्दर्शन के लिए उसमें से कुछ घटनायें पुस्तिका रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तिका से आर्य जगत में श्रद्धेय श्री स्वामी जी महाराज के उस सम्पूर्ण ग्रन्थ के स्वाध्याय के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा होगी जिस ग्रन्थ के आधार पर यह पुस्तिका प्रकाशित की गई है।

आर्य जगत के धन से स्थापित सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने अपने अल्प साधनों के होते हुए भी अत्यन्त सस्ता आर्य साहित्य लाखों की संख्या में प्रकाशित करके वैदिक धर्म प्रचार की दिशा में जो कुछ कार्य किया है वह सब भारत भर की आर्य संस्थाओं एवं आर्य जनों के सहयोग से ही सम्भव हो सका है।

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के आनरेरी संचालकगण सर्वश्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, बा० ऋषि राम जी, बा० श्रीकृष्ण जी, बा० हरिशंकर जी एडवोकेट, चौ० पद्मसिंह जी तथा बा० चेतराम जी आदि महानुभाव अहर्निश संस्था की उन्नति के चिन्तन में तत्पर रहते हैं और आर्य जनता से पूरे पूरे हार्दिक सहयोग की आकांक्षा रखते हैं। गत १० वर्षों में अनेक झगड़े-झंझटों से भी संस्था को छुटकारा मिला है।

—प्रबन्धक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी.........
पु०सं०.........
भारती पुस्तकालय

॥ ओ३म् ॥
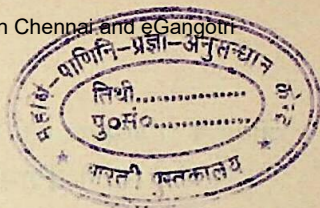
स्वामी श्रद्धानन्द की डायरी से

मेरा जन्म स्थान

(मां पर पूत पिता पर घोड़ा । बहुत नही तो थोड़ा थोड़ा ॥

सम्वत् १६१३ विक्रमी, मास फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के दिन मेरा जन्म हुआ । मेरे पिता उन दिनों रोजगार की तलाश में घर से बाहर गये हुए थे । पञ्चनद (पंजाब) प्रान्त में जालन्धर एक जिला है जो अपने मुख्य नगर के नाम से प्रसिद्ध है ।

तलवन में मेरा जन्म हुआ और पाधाजी ने जन्म-नाम बृहस्पति रख कर भी प्रसिद्ध नाम 'मुन्शीराम' रख दिया । मेरे तीन भाई और थे तथा दो बहिनें । मैं सबसे छोटा अपनी माता की अन्तिम सन्तान था । आयु के क्रमानुसार सब भाई बहिनों के ये नाम थेः—(१) सीताराम (२) प्रेमदेवी (३) मूलाराम (४) द्रौपदी (५) आत्माराम (६) मुन्शीराम ।

तत्त्ववेत्ताओं ने दो प्रकार के संस्कार बतलाये हैं । पूर्व जन्म के संस्कार ही वर्त्तमान योनि के कारण होते हैं और उन्हीं के अनुसार बुरे वा भले माता पिता भी मिलते हैं । उन माता पिता के गुणों अवगुणों का विशेष प्रभाव सन्तान पर पड़ता है । इनको पैतृक संस्कार कहते हैं । यद्यपि पैतृक संस्कार भी अपने पूर्व कर्मों के ही फल हैं तथापि इन्हें अलग समझ कर भी जीवन के बहुत से भेद खुल जाते हैं ।

दो विशेष घटनाऐं

दो विशेष घटनाओं का वर्णन करना आवश्यक है जिन्होंने मेरे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के भविष्य पर बड़ा प्रभाव डाला था।

इनमें से पहला **देशभक्त डाकू संग्रामसिंह** का दर्शन था। संग्रामसिंह बनारस जिले के एक ग्राम का साधारण कृषिकार था और साधारण जीवन व्यतीत करता था। उसकी अनुपस्थिति में पुलिस ने उसके घर की तलाशी ली और उसकी धर्मपत्नी का सतीत्व नष्ट करने की चेष्टा की। राजपूत ने घर लौट कर सब हाल सुना तो पुलिस के बड़े अफसर के पास फरयादी गया। वहां उसके साथ भी पिशाचत्व का बर्ताव हुआ। राजपूती खून जोश में आया, पुरानी छिपाई हुई तलवार निकाल पहले निरपराधिनी अर्द्धाङ्गिनी को सदा के लिये बदनामी से बचा कर संग्रामसिंह ने जङ्गल की राह ली। तलवार का स्वयं धनी था, उसके साथ दूसरा राजपूत हाथीसिंह मिल गया जिसका बन्दूकी निशाना कभी खाली नहीं जाता था। जनरल संग्रामसिंह और कप्तान हाथीसिंह के साथ बीस पच्चीस सिपाही और हो लिये और संग्रामसिंह एक छोटीसी सेना का सिपाही हो गया।

संग्रामसिंह के विषय में उसी प्रकार की लोकोक्तियां प्रसिद्ध हो गईं जो देशभक्त डाकुओं के विषय में अंग्रेजी इतिहास तथा उपन्यास की पुस्तकों में मैंने दूसरी बार काशी में आकर पढ़ी थीं। अमीरों को लूटने और निर्धनों को आर्थिक सहायता देने की कई कहानियां प्रसिद्ध थीं। वेश्याओं को नाच दिखाने की आज्ञा हुई तो बहली पर साज सामान लाद कर वह चल दीं और जङ्गल में मङ्गल हो गया। बनारस जौनपुर और आजमगढ़ के जिलों में संग्रामसिंह ने ऊधम मचा दिया। तब तो अंग्रेज पूलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट (Police Superintendent) ने १५० हथियार बन्द सेना लेकर उस स्थान के गिर्द बड़ा घेरा डाल दिया जहां संग्रामसिंह की स्थिति सुनी थी और स्वयम् दो अर्दली साथ लिये घोड़े पर धीमी चाल से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने लगे। अकस्मात् दो आदमियों ने दोनों अर्दलियों को दबा लिया और तीसरे ने साहब बहादुर को घोड़े से नीचे फेंक कर पिस्तौल दिखाई। साहब ने डर के मारे सोने की घड़ी, जञ्जीर, नोट, रुपये सब कुछ डाकू की भेंट कर दिये। तब डाकू ने जीन के कबूलों में धरे पिस्तौल के जोड़े को सम्भाल कर सलाम किया और कहा—"संग्रामसिंह को पकड़ने ऐसी असावधानी से न आया करो।" स्वतन्त्र होकर सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने जो घोड़े को एड़ी दी तो अपने बङ्गले पर पहुंच कर ही दम लिया।

अब शहर बनारस पर डाकुओं के आक्रमण होने लगे। शहर कोतवाल एक राजपूत, आलमसिंह नामी, था। उसने डींगमारी कि एक मास के अन्दर ही संग्रामसिंह को पकड़ कर साहब मजिस्ट्रेट के हवाले कर देगा। सग्रामसिंह को पता लग ही जाना था। चार पांच दिन पीछे कोतवाली के बोर्ड पर संग्रामसिंह का इश्तिहार लग गया। आलमसिंह को सम्बोधन करके लिखा था—"अब हमारे धावे काशी नगर पर ही हो रहे हैं। चन्द्रग्रहण का स्नान करने भी आऊंगा यदि क्षत्री के वीर्य से है तो सामने होना।"

कुछ दिन पीछे चन्द्रग्रहण का नहान था। अपनी माता को गङ्गा नहलाने के लिये संग्रामसिंह ने दो साथियों समेत मणिकर्णिका घाट का रास्ता लिया। माता को नहला और साथियों की रक्षा में चलता करके आप उस स्थान की ओर बढ़ा जहां आलमसिंह कोतवाल, पुलिस रिजर्व समेत, प्रबन्ध के लिये बैठा था आलमसिंह के लिए लगाये पहरे व्यर्थ गये क्योंकि एक देहाती कम्बल ओढ़े आलमसिंह की ओर बढ़ा और चेहरा कम्बल से बाहर निकाल—बोला—"देख! संग्रामसिंह स्नान करके जा रहा है।" आलमसिंह चौंक उठा और कुछ बोलने को ही था संग्रामसिंह की छुरी बिजुलीसी चमक गई। आलमसिंह घबरा कर पीछे हटा और संग्रामसिंह भीड़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अन्तर्धान हो गया—"दौड़ियो, पकड़ियो ! वह गया वह गया !" अब शोर मचाने से क्या होता था ! बाज तो उड़ गया।

अन्त को, जब पुलिस के आने जाने से साधारण मार्ग भी बन्द होने लगे तो तीन जिलों में नई पुलिस भरती करके हजारों पुराने जवानों द्वारा सब रास्ते घेर लिये गये। मेरे पिता भी एक स्थान पर, बहुतसी पुलिस समेत, नाका बन्दीकिये बैठे थे। पांच दिन नदी के पानी में घूमने के पीछे संग्रामसिंह पांच छः साथियों समेत कुछ भोजन लेने को निकला। इसका एक आदमी पिताजी के हाथ लगा; उससे पता पाकर पुलिस गिरफ्तारी को बढ़ी। संग्रामसिंह आदि एक चमार की झोंपड़ी में घुस गये। झोंपड़ी को आग लगा दी गई। बहादुर राजपूत बाहर निकला। पानी की नमी से बारूद काम का न रहा। बन्दूक रञ्जक चाट गई। तलवार खींची तो मियान से बाहर न निकली। इधर पुलिस ने गोलियों की बाढ़ें झोंकनी शुरू कर दी। पांचों साथी गिर गये। संग्रामसिंह ने बन्दूक उल्टी पकड़ कर उससे लाठी का काम लिया। तीन चार सिपाही आन की आन में बिछा दिये और पिताजी के घोड़े की गर्दन पर ऐसी चोट लगाई कि जानवर बहुत पीछे हट गया, पिताजी ने पहले अकेले पर गोली चलानी बन्द करादी थी; अब अपने क्षत्रित्व के भावको भूल कर फिर बाढ़ झुकवा दी। संग्रामसिंह २४ वा २५ गोलियां खाकर गिर गया और उसे बांध कर बनारस के अस्पताल में ले आये। प्रसिद्ध है कि जब अंग्रेज सिविल सर्जन (बड़े डाक्टर) ने उसके २५ घाव देखे और कहा कि अन्त को तू पकड़ा गया तो वीर क्षत्री ने उत्तर दिया—"इस प्रकार पकड़ना बहादुरी नहीं, मेरे हाथ में एक तलवार दे दे और मेरे सन्मुख २० आदमी खड़े करा दे। फ़िर देखूं मुझे कौन पकड़ता है।" साहब बहादुर उसकी कड़क से आश्चर्य चकित हो गये। फांसी तो मिलनी ही थी, परन्तु उसे यमपुर पहुंचा कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हिन्दोस्तानी पुलिस अफसरों को शोक ही हुआ। एक तो चारपाई पर लेटे हुये संग्रामसिंह के दर्शन मुझे स्मरण हैं, जिसे दूसरी बार काशी पहुंच कर मैं याद किया करता था और दूसरी घटना एक नास्तिक जादूगर से मेरी रक्षा थी। काशी में प्रसिद्ध हुआ कि एक वेद शास्त्र का ज्ञाता बड़ा नास्तिक आया है जिसके दोनों ओर दिन में मशालें जलती हैं। जो भी पण्डित उससे शास्त्रार्थ करने जाता है उनके तेज से दब जाता है। मुझे भली प्रकार याद है कि माता जी उन दिनों हमें बाहर नहीं जाने देती थीं—इस भय से कि कहीं हम दोनों भाई जादूगर के फन्दे में न फंस जायं। पिताजी ने पीछे बतलाया था कि वह प्रसिद्धी "अवधूत दयानन्द की" थी। माता जी को क्या मालूम था कि उनके देहान्त के पीछे उनका प्यारा बच्चा उसी जादूगर के उपदेश से प्रभावित होकर उसका अनुयायी बन जायगा।

मिर्जापुर की मनोरंजक घटना

मिर्जापुर में पहुंचते ही चैत्र के नवरात्र में बिंदवासिनी देवी का मेला था। पिताजी का खेमा विन्ध्याचल पर जा लगा और मैं उनके साथ ही मेले का आनन्द लूटता रहा। पढ़ाई में यह भी विघ्न था, पर अनुभव वहां भी बढ़ा। उसी स्थान में पिताजी के अर्दली सार्जन्ट जोखू मिसिर की लीला देखी। देवी पर मिर्जापुर में जो बकरे चढ़ते उनमें से सात की सिरिएं मिसिरजी की पेटपूजा के लिये भेंटमें आतीं। सात बकरों के सिर मुफ्त, कण्डों (उपलों) की आग मुफ्त, मिट्टी की हंडिया मुफ्त, नमक व हल्दी भी मुफ्त—हां, पावभर चून (आटा) मोल लाना पड़ता। जोखू मिसिर जितने लम्बे उतने ही चौड़े थे, सातों सिरियों का सफाया करके शेष थाली पावभर चून की लिट्टी से पोंछ और कुल्ला करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेट की तूंबढ़ी पर हाथ फेर दिया करते थे। एक दिन हंडिया पकते पकते पिताजी का नौकर चिमटे से चिलम में आग धर लाया। मिसिरजी आग बबूला हो गये और जब कारण पूछा गया तो बोले—"अरे सरकार! हम आपन धरम कबहूँ नाहीं छोड़ा, अरे! झूठ बुआला, जुवा खेला, गांजा का दम लगावा, दारू चढ़ावा, रिसवत लिहा, चोरी दगाबाजी किहा—कौन फन फरेब बाटे जौन हम नाहीं किहा, मुल सरकार! आपन धरम नाहीं छोड़ा!" सरकार तो मुस्किरा के चल दिये और मेरे पेट में हंसते हंसते बल पड़ गये।

मेरे पूज्य मौलवीसाहब और सर सय्यदअहमद

अपने मौलवी साहब के पैतृक प्रेम का जब स्मरण आता है तो अब भी दिल भर आता है और हिन्दू मुसलमानों के झगड़ों को देखकर बड़ा कष्ट होता है। जिस पवित्र भूमि ने दोनों को जन्म दिया, जिसके अन्न जल ने उन्हें पाला, जिस गंगा के शीतल जल ने शान्ति देने में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई में कोई भेद नहीं किया, उस मातृभूमि के पुत्र आपस में लड़ झगड़ कर माता को सताते हैं यह कैसे कष्ट की बात है। परन्तु जिस समय का मैं जिक्र कर रहा हूँ उससे पहले भी सम्वत् १९२३ में चन्द्रनगर के फरांसीसी चीफ जस्टिस 'लुइस जकालियट' ने काशीपुरी में पहुंच कर लिखा था—"ज्योंही मैंने मांझी को अपना बजरा शिवजी के घाट पर बांधने का हुकुम दिया त्योंही एक घटना ने मुझे आश्चर्यित कर दिया। हिन्दू और मुसलमान......बनारस के घाटों की सीढ़ियों पर बिना भेद भाव के इकट्ठे नहा रहे थे। यद्यपि पैगम्बर (मुहम्मदसाहब) के अनुयायी सदा मूर्त्ति पूजा के विरुद्ध और तलवार के साथ युद्ध करते रहे हैं परन्तु औरङ्गजेब के शासनकाल से पहले वे अपने पराजित शत्रु के पवित्र तीर्थ का मान करते रहे थे।

मेरे सामने काशी में सर सय्यद अहमद की बदौलत हिन्दू

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों में परस्पर के विद्वेष की बुनियाद पड़ने लग गई थीं, परन्तु मेरे पूज्य मौलवी साहब के ढरें के मुसलमान उस विरोध को देख कर दुखी होते थे।

काशी में एक पिशाच साधु

कुछ दूरी पर एक सेंधिया घाट है। वह गंगा की बाढ़ से हिल चुका था और इसके नीचे एक गुफा सी बन गई थी। इसमें कुछ काल से एक नङ्गा साधु रहता था जो एक समय ही भोजन करता था और वह भी विचित्र नियम से, जो कोई पहले भोजन लाता उसी को स्वीकार करके फिर शेष किसी की भेंट स्वीकार न होती। इसलिये सैकड़ों स्त्री पुरुष उत्तम से उत्तम भोजन तय्यार करके ले जाते। अस्तु ! सेंधिया घाट के पास पहुंचा ही था कि एक चीख की आवाज सुनाई दी। दौड़ कर गुफ़ा के पास गया तो किसी स्त्री का सिर बाहर धर्ती से लगा और उसकी दोनों बाहें द्वार के दोनों ओर गढ़ी हुई दिखाई दीं। अन्दर से उसको कोई खींच रहा था और वह बाहर निकलने का यत्न कर रही थी। मैंने जाकर लातें चट्टान में मजबूती से लगाईं और उसकी दोनों बाहुओं को दोनों हाथों से पकड़ कर खेंचने लगा। परन्तु अन्दर का पिशाच बड़ा बलवान् और कामान्ध प्रतीत होता था। बेचारी अबला का दम घुट रहा था। मैंने बिन्दासिंह को पुकारा उसने आकर मुझे दृढ़ता से पकड़ लिया और मैंने दुष्ट को डांट बतलाते हुए उस विवश पीड़ित देवी को बाहर खींच लिया। उसकी आयु १६ वर्ष से अधिक न थी। मैंने उस मूर्छित देवी को अलग किया तो एक और अधेड़ स्त्री पास आ गई। उसे मैंने पहचाना कि हमारे कुल के परिचित एक खत्री ग्रेजुएट की भौजाई है। मेरे परिचित ग्रेजुएट का कल्पित नाम देवीप्रसाद समझ लीजिये। पता लगा कि जिस देवी के सतीत्व की रक्षा की गई है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह देवीप्रसाद की दूसरे विवाह की स्त्री है। यह पीछे से पता लगा कि पति महाशय तो विलायत परीक्षा की तय्यारी में अलग लगे रहते हैं और भौजाई को यह फिक्र है कि उनकी देवरानी के सन्तान होनी चाहिये इसलिये ३ बजे तड़के ही खोये की मिठाई और पूरी आदि का थाल हाथ में देकर सरल हृदय राजरानी को गुफा में भेज कर बाहर खड़ी हो गई। राजरानी के कपड़ों के चिथड़े उड़ गये थे, शरीर में रगड़ों से लहू बह रहा था, और वह कांप रही थी। मैंने बानात की चादर ओढ़ी हुई थी। उससे देवी का सारा शरीर ढक दिया और जो भीड़ जमा हो रही थी, उससे बचा दोनों देवियों को घर पहुंचा कर देवीप्रसाद को चौकन्ना कर आया।

घाट पर लौटा तो उस नङ्गे पिशाच को जूतों की मार पड़ रही थीं। और पुलिस के जमादार आदि आ गये थे। एक भली देवी की इज्जत का सवाल था। मेरे कहने से उस पिशाच पर नाक रगड़वा और यह प्रतिज्ञा लेकर कि वह फिर कभी काशी नहीं लौटेगा, पुलीस वाले उसे राजघाट से पार पहुंचा आये। परन्तु हिन्दू समाज की विचित्र अन्धी श्रद्धा का मुझे उस समय पता लगा जब सं० १८८१ ई० के अगस्त मास में गाजीपुर जाते हुये मैंने बनारस ठहर कर उसी दुष्ट पिशाच को घाट के मार्ग में नङ्गे बैठे और स्त्री पुरुषों को उसकी उपस्थेन्द्रिय पर जल पुष्पादि चढ़ाते देखा। प्रयागदत्त जमादार को जब पूछा तो उत्तर मिला—"अरे बाबू! धरम का मामिला ठहरा। अंग्रेज हाकिमौ कतराजात बाटैं।"

मथुरा की दो बातें नहीं भूलेंगी

मथुराकी दो बातें नहीं भूलेंगी। एक तो चौबों का ब्रह्मभोज (नहीं चौबे भोज) और दूसरी गोकुलिये गुसाईं जी की लीला। चौबे भोज का मेरे जाने पर पिता जी ने विचार किया। हमारे चौबेजी बोले —"यजमान मन के दस निमन्त्रित किये जांय वा मन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चार।" अँ! तौल में चार चार और दस दस सेर के चौबे भी होते हैं। नहीं, मतलब यह कि मनभर उत्तम भोज्यपदार्थ दस बांट कर खांय या चार ही चट्टम कर जांय। यही ठहरी कि मन के चार निमन्त्रित हों। चारों की जुन्डी थी और उनके नाम थे—(सोटा+मोटा+लोटा+लंगोटा) चौबे। निमन्त्रण के साथ ही एक एक दतवन और छटांक छटांक भर भङ्ग भेज दी गई। भङ्ग इसलिए कि प्रातः विश्राम घाट पर पहुंचते ही चोबे जी पत्थर पर भङ्ग का रगड़ा लगा गोली बांध कंठ से नीचे कर लें। इस भङ्ग का नाम था कागावासी। आठ बजे चारों चौबे कृष्णगोपीलीला गाते और नाचते कूदते हुए हमारे डेरे पर पहुँचे। उनके चरण पखार कर आसन दिये गये। आज्ञा हुई—"लाओ यजमान भोग-विलासी।" डेढपाव भङ्ग भिगो रखी थी। चौबे जी ने घोई। खूब रगड़ा लगाया। फिर उसमें बादाम और इलायची मिला कर पीस डाला, दूध छोड़ दो लोटे पानी में गड्डमड्ड करके पहिले द्वारिका-धीश को भोग लगा। एक छोटी कटोरी भर वहां निकालकर बांटी गई। एक कटोरी भर हमें मिली जो पिताजी, मैं, याचक, कहार और अरदली बांट कर पी गए। शेष चारों चौबों ने चढ़ाली। ११ बजे भोजन तय्यार हुआ—"चलो चौबे जी! बाल भोग तैय्यार है" चौबे जी की आंखें बन्द हैं; बोले—"यजमान! आसन पर ले चल" हाथ पकड़ उठाया, चरण धोए और आसन पर बैठा दिया। पहिले डेढ़ डेढ़ सेर लच्छेदार मलाई अन्दर गई. आंखें खुलीं और मांग शुरू हुई। दो दो सेर पेड़े, उन पर भाजी पकौड़ी आदि के साथ तीस तीस पूरियों की तह. फिर खुर्चन, फिर उतनी ही पूरियों की तह, फिर हलवा और अन्त में मलाई की पूर्णाहुति। हाथ धुला कर हथेलियों पर एक एक रुपया दक्षिणा रखी गई और चौबेजी को प्रणाम किया। परन्तु चौबे अभी खड़े हैं—"यजमान! अब सत्या-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाशी भी मिल जाय।" छटांक छटांक भर भङ्ग और दी गई तब चौबेजी हिले। पिता जी को भ्रम था कि कहीं इन चौबों के पेट न फट जायं और ब्रह्म हत्या का पाप उन्हें लगे, परन्तु जब शाम को मैं विश्रान्त पहुँचा तो सत्यानासी के रगड़े में सब कुछ भस्म करके चारों चौबे कुश्ती लड़ रहे थे और इस प्रतीक्षा में थे कि कोई 'लड्डुआ खिलाने वाला यजमान' मिल जाय।

दूसरी गुसाईं जी की लीला थी। दक्षिण के एक डिप्टीकलेक्टर ब्रज यात्रा को आये थे। उनकी धर्मपत्नी और एक लड़का और एक लड़की साथ थे। पुत्र ६ वा ७ वर्ष का और पुत्री १४-१५ वर्ष की। वह कुमारी देवी अंग्रेजी भी पढ़ी हुई थी। मुझ से उनका परिचय हो चुका था, क्योंकि काशी तीर्थ सेवा करके वह मेरे साथ ही मथुरा में पहुंचे थे। एक दिन गोपाल मन्दिर की झांकी थी। मैं भी गया था। पांच बजे शाम का समय था। मेरे साथ एक सफैदपोश पुलीस का हेडकान्स्टेबल था। उससे गुसाईं जी दबते थे, क्योंकि वह था उनके घर का भेदी। मुझसे उसने कहा—"चलो बाबू! गुसाईं के अन्दर के महल की सैर करा लाऊं।" मैं साथ हो लिया। दर्बान ने यह कह कर रोका कि विशेष चेले दर्शन कर रहे हैं, जाने की आज्ञा नहीं। परन्तु "संन्यासी, गुरु, चपरासी" को कौन रोकने वाला था। हम दोनों अन्दर गये। बहुत कमरे और उतनी ही भूल भूलइयां वाली गलियां। अभी पांच मिनट ही घूमे थे कि चीख की आवाज सुनाई दी। पास वाले कमरे का दरवाजा झटके से खोल कर अन्दर गये। एक अबला कुमारी को गुसाईं जी अपनी ओर खींच रहे थे और वह छुड़ा कर भागने की चेष्टा कर रही थी। गोसाईं ने कुमारी को छोड़ खड़ी कृष्ण मूर्त्ति की ओर इशारा करके कहा—"भगवान के दर्शन से यह घबरा गई थी, मैं चुप कराता था" कुमारी बोली—"Don't believe him sir. He caught

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

hold of me while I was touching his feet. Then I cried O ! take me to my father." (इसका विश्वास न कीजिये। मैं इसके चरण स्पर्श कर रही थी तब इसने मुझे पकड़ लिया। तब मैं चिल्लाई। आह ! मुझे पिता के पास ले चलो) जमादार साहब को तो गुसाईं जी से समझौता करते छोड़ा और मैं उस कुमारी को सीधा उसके पिता के पास ले गया जो उसे नीचे न पाकर ऊपर तलाश कर रहे थे। मालूम होता है कि ये सब फैले हुए घूम रहे थे कि वह अधेड़ स्त्री कुमारी को कृष्ण पूजा के लिये अन्दर ले गई। स्वयं गुसाईं जी के चरण स्पर्श करके अलग हो गई और कुमारी को चरण स्पर्श के लिये आगे बढ़ा दिया। यह वही दक्षिणी डिप्टी कलक्टर थे जो मेरे साथ आये थे। उनको बड़ा दुःख और क्रोध हुआ। उसी समय गुसाईं जी के यहां से उठ कर दूसरे मकान में चले गये। मुझसे उन्होंने कहा कि इस मूर्तिपूजा से ही उनका विश्वास हट गया हैं और वह अब अन्य किसी तीर्थ पर न ठहर कर सीधे अपने देश को चले जायेंगे।

प्रयाग में अहिंसक शेर और महात्मा

मैं बतला चुका हूँ कि मैं विचित्र नास्तिक था जो योगाभ्यास और उसकी विभूतियों पर विश्वास रखने वाला था और साथ ही हठ प्रक्रियाओं का प्रयोग भी करता था। बरैली में और वहां से लौट कर प्रयाग में कुछ विशेष परिश्रम किया, परन्तु कुपथ के कारण बीमार होगया। मैंने सुना कि त्रिवेणी पार झूंसी के जङ्गल में एक महात्मा रहते हैं जिनके वश में एक शेर है। दिन को अन्तर्धान रहते हैं, केवल रात को उनके दर्शन हो सकते हैं। मैं अपने मित्र, बुद्धसेन तिवारी सहित जिनको मेरी संगति ने ही योग की ओर झुकाया था, सिदौसी भोजन से निवृत्त होकर शाम को पार उतर गया। इधर उधर घूमते हुए दस बजे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम के समीप पहुंचे। एक वृद्ध, केवल कोपीनधारी महात्मा को समाधिस्थ मैदान में बैठे देखा। तीन बजे तक न उनकी समाधि खुली और न हमारी आंख झपकी। तीन बजे के लगभग शेर की गरज सुनाई दी। फिर वह सीधा महात्मा की ओर आता दिखाई दिया। समीप पहुंचने पर उनके पैर चाटने लगा। महात्मा ने आंखें खोलीं, शेर के सिर पर प्यार का हाथ फेरा और कहा—"बच्चा! आ गया, अच्छा अब चला जा" शेर ने सिर चरणों में रख दिया, और उठ कर जङ्गल की राह ली। उसी समय हम दोनों ने पैर छू कर महात्मा को प्रणाम किया और इस अद्वितीथ विभूति पर आश्चर्य प्रकट किया। महात्मा का उत्तर कभी नहीं भूलता—"यह कोई विभूति नहीं है बच्चा! इस शेर के किसी शिकारी ने गोली मारी थी। इसके पैर में ऐसा घाव लगा कि यह चल नहीं सकता था और व्याकुलतासे हृदय वेधक शब्दकर रहा था। शायद प्यासा था। मैंने लाकर पानी पिलाया और जङ्गल से अपनी जानी हुई एक बूटी लाया और रगड़ कर इसके पैर में लगाई। घाव अच्छा होने लगा। जब तक मैं दवाई लगाता रहता यह नित्य मेरे पैरको चाटता रहता। जब सर्वथा निरोग हो गया तब भी इसका व्यसन नहीं छूटा। नित्य मेरी उपासना की समाप्ति पर आ जाता है। सुनो बच्चा! अहिंसा का अभ्यास और सेवा व्यर्थ नहीं जाते।" हम पर जो प्रभाव पड़ा वर्णन नहीं किया जा सकता। मैंने अपने साधनों और बीमारी की कहानी सुनाई। महात्मा ने बतलाया कि हठयोग की क्रियायें शरीर के लिये हानि कारक सिद्ध होती हैं और कैवल्य के मार्ग से विमुख कर देती हैं। तुम राज योग का अभ्यास करो और इसको छोड़ दो। बीमारी के दूर करने को उन्होंने ब्राह्मी बूटी का एक विशेष सेवन बतलाया। उन्हें मालूम हो गया कि मेरी परीक्षा समीप है और इसलिये आज्ञा दी कि जब मैं परीक्षा से निवृत्त होकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी सेवा में उपस्थित हूंगा तब वह मुझे राजयोग का उपदेश करेंगे।

ऋषि दयानन्द का सत्संग

एक विशेष घटना

"नायमात्माप्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।"

१४ श्रावण संवत् १९३६ के दिन स्वामी दयानन्द बांसबरेली पधारे। ३ भाद्रपद को चले गये। स्वामीजी महाराज के पहुंचते ही कोतवाल साहब को और हुकम मिला कि पण्डित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों के अन्दर फिसाद को रोकने का बन्दोबस्त कर दें। पिता जी स्वयं सभा में गये और स्वामी जी महाराज के व्याख्यानों से ऐसे प्रभावित हुए कि उनके सत्संग से मुझ नास्तिक की संशय निवृत्ति का उन्हें विश्वास हो गया। रातको घर आते ही मुझे कहा— "बेटा मुन्शीराम! एक दण्डी संन्यासी आए हैं, बड़े विद्वान और योगिराज हैं उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायंगे। कल मेरे साथ चलना।" उत्तर में कह तो दिया कि चलूंगा परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा। दूसरे दिन बेगम बाग की कोठी में, पिताजी के साथ पहुंचा जहां व्याख्यान हो रहा था। उस दिव्य आदित्य मूर्त्ति को देख कुछ श्रद्धा उत्पन्न हुई; परन्तु जब पादरी टी. जे. स्काट और दो तीन अन्य युरोपियनों को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढ़ी। अभी दस मिनट वक्तृता नहीं सुनी थी कि मन में विचार किया—"यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल संस्कृतज्ञ होते हुए ऐसी युक्तियुक्त बातें करता है कि विद्वान् दङ्ग हो जायं।" व्याख्यान परमात्मा के निज नाम ओ३म् पर था। वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नास्तिक रहते हुये भी आत्मिक आह्लाद से निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम था।

उसी दिन दण्डी स्वामी से निवेदन किया गया कि टाउनहाल मिल गया है इसलिये व्याख्यान कल से वहां शुरू होंगे। स्वामी जी ने उच्च स्वर से कह दिया कि सवारी समय पर पहुंच जाया करेगी तो वह तय्यार मिलेंगे।

टाउनहाल में जबतक "नमस्ते" "पोप" "पुरानी, जैनी, किरानी, कुरानी" इत्यादिक परिभाषाओं का अर्थ बतलाते रहे तबतक तो पिता जी श्रद्धा से सुनते रहे, परन्तु जब मूर्तिपूजा और ईश्वरावतार का खण्डन होने लगा तो जहां एक ओर मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी वहां पिताजी ने आना बन्द कर दिया और एक अपने मातहत थानेदार की ड्यूटी लगा दी। २४ अगस्त की शाम तक मेरा समय विभाग यह रहा कि दिन का भोजन करके दोपहर को ही बेगम बाग की कोठी पहुंच ड्योढ़ी पर बैठ जाता। ३॥ और ४ बजे के बीच में जब ऋषि का दर्बार लगता तो आज्ञा होते ही जो पहला मनुष्य आचार्य्य ऋषि को प्रणाम करता वह मैं था। प्रश्नोत्तर होते रहते और मैं उनका आनन्द लेता रहता। व्याख्यान के लिए २० मिनिट से पहले सब दर्बारी विदा हो जाते और आचार्य्य चलने की तय्यारी कर लेते। मैं अपनी "वेगनट" पर सीधा टाउनहाल पहुंचता। व्याख्यान का आनन्द उठाकर उस समय तक घर न लौटता जबतक कि आचार्य्य दयानन्द की बग्घी उनके डेरे की ओर न चल देती। २५, २६, २७ अगस्त को ऋषि दयानन्द के, पादरी स्काट के साथ तीन शास्त्रार्थ हुये। विषय प्रथम दिवस, पुनर्जन्म, द्वितीय दिन ईश्वरावतार, और तीसरे दिन यह था कि 'मनुष्य के पाप बिना फल भुगते क्षमा किए जाते हैं वा नहीं। पहले दो दिन लेखकों में मैं भी था। परन्तु दूसरी रात को मुझे सन्निपातज्वर हो गया और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर आचार्य दयानन्द के दर्शन मैं न कर सका। ३० श्रावण से ९ भाद्रपद (१५ से २५ अगस्त) तक ऋषि जीवन सम्बन्धी अनेक घटनाएं मैंने देखीं, जिनमें से उन्हीं कुछ एक को यहां लिखूंगा जिन का प्रभाव मुझ पर ऐसा पड़ा कि अबतक वे मेरी आंखों के सामने घूम रही हैं।

मुझे आचार्य दयानन्द के सेवकों से मालूम हुआ कि वह नित्य प्रातः शौच से निवृत्त होकर, केवल कौपीन पहिरे लट्ठ हाथ में लिये, ३॥ बजे बाहर निकल जाते हैं और ६ बजे लौट कर आते हैं। मैंने निश्चय किया कि उनका पीछा करके देखना चाहिये कि बाहर जाकर वह क्या करते हैं। दबदब-ए-कैसरी अखबार के एडीटर भी मेरे साथ हो लिये। ठीक ३॥ बजे बाहर निकल कर आचार्य चल दिये। हम पीछे हो लिये। पाव मील धीरे धीरे चलकर वह इस तेजी से चले कि मुझसा शीघ्रगामी जवान भी उन्हें निगाह में न रख सका। आगे तीन मार्ग फटते थे। हमें कुछ पता न चला कि किधर गये। दूसरे प्रातःकाल हम अढ़ाई बजे से ही घात में उस जगह छिप कर जा बैठे जहां से तीन मार्ग फटते थे। उस विशाल रुद्रमूर्त्ति को आते देखकर हम भागने को तय्यार हो गये। वह तेज चलते थे और मैं पीछे भाग रहा था। मेरे पीछे बनिये एडिटर भी लुढ़कते पुढ़कते आ रहे थे। बीच में एक आध मील की दौड़ भी रुद्र स्वामी ने लगायी। परन्तु वहां मैदान था, मैंने भी उनको आंख से ओझल न होने दिया। अन्त को पाव मील धीरे धीरे चलकर एक पीपल के वृक्ष तले बैठ गये। घड़ी से मिलाया तो पूरे डेढ़ घण्टे आसन जमाये समाधि में स्थित रहे। प्राणायाम करते नहीं प्रतीत हुए, आसन जमाते ही समाधि लग गयी। उठकर दो अंगड़ाइयां लीं और टहलते हुए अपने तत्कालीन आश्रम की ओर चल दिये।

एक शनिश्चर के व्याख्यान पीछे श्रोतागण को बतलाया गया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि दूसरे (आदित्यवार को) नियत समय से एक घण्टा पहले व्याख्यान शुरू होगा। आचार्य ने उसी समय कह दिया कि यदि सवारी एक घण्टा पहले पहुंचेगी तो मैं उसी समय चलने को तय्यार रहूँगा। आदित्यवार को लोग पिछले समय से डेढ़ घण्टे पहले ही जमा होने लगे। हाल (व्याख्यान-भवन) खचाखच भर गया परन्तु आचार्य न पहुंचे। पाव घण्टा आध घण्टा भी बीत गया परन्तु बग्घी की घड़घड़ाहट न सुनायी दी। पौन घण्टा पीछे ऋषि दयानन्द की विशाल मूर्ति, उन्हीं वस्त्रों से अलकृत जो उनके चित्र में दिखाये जाते हैं, ऊपर चढ़ती दिखाई दी। मध्य की डाट के नीचे वाली एक ओर की दीवार में लोटा टेककर, ईश्वर-प्रार्थना के लिये बैठने से पूर्व उन्होंने कहा–"मैं समय पर तय्यार था परन्तु सवारी न आई। बहुत प्रतीक्षा के पीछे पैदल चल दिया। मार्ग में पिछले नियत समय पर ही सवारी मिली। इसलिये देरी हो गयी। सभ्य पुरुषो! मेरा कुछ दोष नहीं है। दोष बच्चों के बच्चों का है जो प्रतिज्ञा करके पालन करना नहीं जानते।" यह संकेत खजाञ्ची लक्ष्मीनारायण की ओर था जिनके अतिथि होकर उनकी बेगम बाग वाली कोठी में स्वामी दयानन्द रहते थे। बाबू लक्ष्मीनारायण सरकारी पांच खजानों के खजाञ्ची थे और बरेली में उस समय करोड़पति समझे जाते थे।

एक व्याख्यान में वह पौराणिक असम्भव तथा आचारभ्रष्ट कहानियों का खण्डन कर रहे थे। उस समय पादरी स्काट, मिस्टर एडवर्ड्स कमिश्नर, मिस्टर रीड कलेक्टर, १५ वा २० अन्य अंग्रेजों सहित उपस्थित थे। आचार्य ने अन्य कहानियों में पंचकुंवारियों की कल्पना पर कटाक्ष किया और एक से अधिक पति रखने वाली द्रौपदी तारा मन्दोदरी आदि के किस्से सुनाकर श्रोतागण के धार्मिक भावों को अपील की। स्वामी जी के कथन में हास्यरस अधिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता था, इसलिये श्रोतागण थकते न थे। साहब लोग हंसते और और आनन्द लूटते रहे। फिर आचार्य बोले--"पुराणियों की तो यह लीला है, अब किरानियों की लीला सुनो! यह ऐसे भ्रष्ट हैं कि कुमारी के पुत्र उत्पन्न होना बतलाते, फिर दोष सर्वज्ञ शुद्ध स्वरूप परमात्मा पर लगाते और ऐसा घोर पाप करते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते।" इतना सुनते ही कमिश्नर और कलेक्टर के मुंह क्रोध के मारे लाल होगये परन्तु आचार्य का भाषण उसी बल से चलता रहा और अन्त तक ईसाई मत का ही खण्डन होता रहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही खजाञ्ची लक्ष्मीनारायण को कमिश्नर साहब के यहां से बुलावा आया। साहब ने कहा—"अपने पण्डित स्वामी को समझा दो कि सख्ती से काम न लिया करें। हम ईसाई तो सभ्य हैं, वाद-विवाद की सख्ती से नहीं घबराते परन्तु यदि जाहिल हिन्दू मुसलमान भड़क उठें तो तुम्हारे पण्डित स्वामी के व्याख्यान बन्द हो जायेंगे।" खजाञ्ची जी यह सन्देश आचार्य तक पहुंचाने की प्रतिज्ञा करके लौटे। खजाञ्ची जी चाहते थे कि बात छेड़ने वाला कोई अन्य मिल जाय जिससे वह आचार्य की 'झाड़ से कुछ कुछ बच जायं। जब कोई खड़ा न हुआ तो मुझ नास्तिक को आगे किया गया। परन्तु मैंने यह कह कर अपना पीछा छुड़ाया कि खजाञ्ची साहब कुछ कहना चाहते हैं क्योंकि कमिश्नर साहब ने उनको बुलाया था। अब सारी मुसीबत खजाञ्ची जी पर टूट पड़ी। खजाञ्ची साहब कहीं सिर खुजलाते हैं, कहीं गला साफ करते हैं। पांच मिनट तक आश्चर्यित रह कर आचार्य बोले—"भाई तुम्हारा तो कोई काम करने का समय ही नियत नहीं, तुम समय के मूल्य को नहीं समझते। मेरे लिये समय अमूल्य है। जो कुछ कहना हो कह दो।" इस पर खजाञ्ची जी बोले—"महाराज! अगर सख्ती न की जाय तो क्या हर्ज है? इससे असर भी अच्छा पड़ता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजों को नाराज करना भी अच्छा नहीं—इत्यादि इत्यादि।" बड़ी कठिनाई से अटक अटककर ये वचन गरीब के मुंह से निकले। महाराज हंसे और कहा—"अरे! बात क्या थी जिसके लिये गिड़-गिड़ाता है। मेरा इतना समय भी नष्ट किया। साहब ने कहा होगा तुम्हारा पण्डित कड़ा बोलता है, व्याख्यान बन्द हो जायंगे, यह होगा, वह होगा। अरे भाई! मैं हौवा तो नहीं कि तुझे खालूंगा। उसने तुझसे कहा, तू सीधा मुझसे कह देता। व्यर्थ इतना समय क्यों गँवाया?" एक विश्वासी पौराणिक हिन्दू बैठा था, बोला— "देखा! यह तो कोई अवतार है, मनकी बात जान लेते हैं।"

उस शामके व्याख्यानको कौन सुनने वाला भूल सकता है? मैंने बड़े बड़े वाग्विशारदोंके व्याख्यान सुने हैं, परन्तु जो तेज आचार्यके उस दिन के सीधे सादे शब्दोंसे निकल कर सारी सभाको उत्तेजित कर गया उसके साथ किसकी उपमा दूं। उस दिन आत्माके स्वरूप-पर व्याख्यान था। पूर्व दिवसके सब अंग्रेज (पादरी स्काटके अति-रिक्त) उपस्थित थे। व्याख्यानमें सत्यके बलका विषय आया। सत्य की व्याख्या करते हुए आचार्यने कहा—"लोग कहते हैं कि सत्यको प्रगट न करो, कलक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।" इसके पीछे एक श्लोक पढ़कर आत्माकी स्तुति की। न शस्त्र उसे काट सकें, न आग उसे जला सके, न पानी उसे गला सके और न हवा उसे सुखा सके। वह नित्य अमर है। फिर गरजते हुए शब्दोंमें बोले—"यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षामें प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नाश कर दे।" फिर चारों ओर तीक्ष्ण दृष्टि डालकर सिंहनाद करते हुए कहा— "किन्तु वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखलाओ जो मेरे आत्माका नाश करने का दावा करे। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखायी नहीं देता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबतक मैं यह सोचनेके लिये भी तय्यार नहीं कि मैं सत्यको दबाऊंगा वा नहीं।" सारे हालमें सन्नाटा छा गया। रुमालका गिरना भी सुनायी देता था।

व्याख्यानमें कुछ देर हो गयी थी। उठते ही ऋषि दयानन्द ने पूछा—"भक्त स्काट आज दिखायी नहीं दिये।" पादरी साहब किसी व्याख्यानसे भी अनुपस्थित न होते थे, और अलग भी प्रेमसे वार्तालाप किया करते थे, इस लिये ऋषिको उनसे बड़ा प्रेम हो गया था। किसी ने कहा, पास के गिरजे (चेप्ल) में आज उनका व्याख्यान था। सीढ़ियों के नीचे उतरते ही ऋषि ने कहा—"चलो, भक्त स्काटका गिरजा देख आवें।" अभी तीन चार सौ आदमी खड़े थे। वह सारी भीड़ लेकर गिरजा पहुंचे। वहां व्याख्यान समाप्त हो चुका था। श्रोता सौके लगभग थे। पादरी साहब नीचे उतर आगे, स्वामी जी को वेदी (पुलपिट) पर ले गये और कहा कि कुछ उपदेश दीजिये। आचार्य ने खड़े २ ही वीस मिनिट तक मनुष्य पूजा का खण्डन किया

एक दिन आचार्य को पता लगा कि खजाञ्ची जी का सम्बन्ध किसी वेश्यासे है। उनके आनेपर पूछा—"तुम्हारा वर्ण क्या है?" उन्होंने कहा—"क्या कहूं, आप तो गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था मानते हैं।" आचार्य बोले-"यों तो सब वर्णसंकर हैं परन्तु तुम जन्म के क्या हो?" उत्तर मिला कि खत्री। महाराज बोले—"यदि खत्री के वीर्य से वेश्या में पुत्र उत्पन्न हो तो उसे क्या कहोगे?" खजाञ्ची जी ने सिर नीचा कर लिया। इसपर महाराज ने कहा—"सुनो भाई! हम किसी का मुलाहजा नहीं करते। हम तो सत्य ही कहेंगे।" खजाञ्ची जी ने उस वेश्या को कहीं अन्यत्र भिजवा दिया।

एक अन्तिम घटना के साथ इस अपूर्व सत्सङ्ग की कथा समाप्त करता हूँ। यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था तथापि मैं मनमें सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ढकोसले को पण्डित दयानन्द स्वामी तिलांजलि देदें तो फिर कोई भी विद्वान् उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कना शक्ति का सामना करने वाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्वपर आक्षेप कर डाले । पाँच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वापर मुहर लग गयी। मैंने कहा—"महाराज ! आप की तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है; आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है।" दूसरी बार फिर तय्यारी करके गया, परन्तु परिणाम पूर्ववत् ही निकला। तीसरी बार फिर पूरी तय्यारी करके गया परन्तु मेरे तर्क को फिर पछाड़ मिली। मैंने फिर अन्तिम उत्तर वही दिया—"महाराज ! आपकी तर्कनाशक्ति बड़ी प्रबल है; आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।" महाराज पहले हँसे, फिर गम्भीर स्वर से कहा—"देखो, तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिये—यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे। अब स्मरण आता है कि नीचे लिखा उपनिषद्वाक्य उन्होंने पढ़ा था—

"नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैषवृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वांम्।"
कठ० १।२।२२॥

एक विशेष घटना का वर्णन संवत् १९४० के अन्तर्गत ही करना चाहिये। ऋषि दयानन्द ने (चान्द्र) १३ कार्तिक (दीपमालिका की शाम) को अन्तिम समाधि लगाकर अपने काम का बोझ, आर्यसमाजों पर छोड़ा। देश के सब प्रान्तों में शोक सभाएं हुईं और कोई भी समाचारपत्र ऐसा न था जिसमें उनके काम और विद्वत्ता की प्रशंसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न निकली हो । जब समाचारपत्रों में यह शोक समाचार मुद्रित हुआ उस समय मैं जालन्धर में था। मेरी प्रेरणा पर शोकसभा पण्डित शिवनारायण वकील के कमरे में की गयी। लाहौर से वक्ता मांगे गए। वहांसे पण्डित गुरुदत्त और लाला हंसराज भेजे गये। हम सब उनके स्वागत के लिए रेलवे स्टेशन पर गये। जब एक पिद्दा सा एम० ए० क्लास का विद्यार्थी और बी० ए० क्लास का सूक्कड़ सा हड्डियों का पिंजर दिखाई दिया तो पण्डित शिवनारायणादिने कहा कि लाहौर वालों ने हमारे साथ मखौल किया है कि लड़के भेज दिये। परन्तु जब ला० हंसराज उर्दू में और पण्डित गुरुदत्त अंग्रेजी में संशोधक दयानन्द के गुण वर्णन कर चुके तो एक दर्जन से अधिक वकीलों में से किसी का हौसला नहीं पड़ता था कि उनके धन्यवाद के लिये चार शब्द बोल दे। अन्त को सब शेखीबाजों को मौन देख कर पण्डित देवीचन्द्र वकील ने चार पंक्तियां बोल दीं।

हिन्दू देवीका मातृभाव और आर्य सभ्यताकी श्रेष्ठता।

सरस्वती स्वामी का अनन्य भक्त सन्निपात ज्वर से पीडित बीमारी के बिस्तर पर बेहोश पड़ा ही था कि वह बरैलीसे विदा हो गये। जब ज्वर से मुक्त होकर होश आया तो पहली इच्छा स्वामी के चरणों में उपस्थित होनेकी प्रकट की। सुना कि वह शाहजहाँपुर पधार गये। जिस हकीम लल्लाजी के इलाज से बरैली पहुँचते ही बीमारी से मुक्त हुआ था, उसीकी बेमालूम औषधि से अब ज्वर टूटा। हकीम, वैद्य और डाक्टर ४८ घण्टों में कितने ही बदले; जब छः घण्टे हाथ पैर मार और १५०) लेकर अंग्रेज सिविलसर्जन भी विदा हो गये तब पिता जी ने विवश होकर आवारागर्द लल्ला को बुलाया। मेरे मित्र को शेष सारी दुनिया भूल गयी और सब चिकित्सकों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पाँच सात गालियाँ देकर पाँव की ओर बैठ गया। प्यास बहुत लगी थी; घड़े का ठंढा पानी मँगाया, उसमें मिसरी घोली और ३ मासे की लाल पुड़िया मिला कर पूरा गिलास शर्बत का पिला दिया। फिर नाभी में एक रौगन मला और काँसे के कटोरों से हाथों और पैरों में मक्खन लगाकर मालिश शुरू हो गयी। फिर तीन तीन घण्टों के पीछे दो बार पूर्ववत ठण्ढे पानी में मिसरी घोल और हरी पुड़िया मिला कर शर्बत पिलाया गया। १२ घण्टोंमें बुखार उतर गया और मुझे नींद आ गयी।

उठने पर लल्लाजी को बुलाया गया–"क्यों भाई! कैसी तबीयत है?" मैंने उत्तर दिया—"अब के बहुत कमजोर हो गया हूँ। पहली बार तो चटनीने १६ घण्टों में ठीक कर दिया था।" लल्लाज़ी बोले—"चटनीकी चाट है; बात तो असल यह है। यह लो, अबके और भी मजेदार बनायी है। जितनी बार दिल चाहे एक अंगुली पर लेकर चाटते जाओ।" चटनी क्या थी, नमक, मीठे, खट्टे, चरपरे-सब प्रकार के स्वादों का मिश्रण था। तीसरे दिन मैं प्रातः भ्रमणार्थ पैदल चला गया।

पिता जी को उन घटनाओं का ज्ञान न था जिन्होंने मुझे नाच तमाशों से घृणा दिलायी और मद्यपान की आदत कुछ काल के लिये छुड़वा दी। उन्हें यह परिवर्तन पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी के सत्सङ्ग का फल दीख पड़ा; इसलिये यद्यपि वे हरिहर के निन्दक संन्यासी की बात स्वयं सुनना पाप समझते थे, तथापि पुत्र के काया-पलट के लिये उसे धन्यवाद देते थे। मुझे आज्ञा हुई कि स्वदेश जाकर अपनी धर्मपत्नी को विदा कर लाऊँ।

मैं घर पहुँचा जालन्धर जाकर सम्बन्धियों से मिला और तीसरी बार अपनी धर्मपत्नी को, बिना मुँह देखे विदा करा लाया। तलबन पहुँच कर अपनी अर्धाङ्गिनी से पहली बातचीत हुई। पुराने नावलों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हवाई किले रुखसत हुए, परन्तु एक नयाभाव उत्पन्न हुआ । वह यह कि जिस अबला को अपना आश्रय मिला है उसे गुणवती बनाने लिये शिक्षा दूं । उस समय मेरे मन में दया और रक्षा का भाव ही प्रबल था ।

बरैली आनेपर शिवदेवी (मेरी धर्मपत्नी) का यह नियम हुआ कि दिन का भोजन तो मेरे पीछे करती ही, परन्तु रात को जब कभी मुझे देर हो जाती और पिता जी भोजन कर चुकते तो मेरा और अपना भोजन ऊपर मँगा लेतीं और जब मैं लौटता उसी समय अंगीठी पर गरम करके मुझे भोजन करा पीछे स्वयं खातीं । एक रात मैं रात के आठ बजे मकान लौट रहा था । गाड़ी दर्जी चौक के दरवाजे पर छोड़ी। दरवाजे पर ही बरैली के बुजुर्ग रईस मुन्शी जीवनसहाय का मकान था । उनके बड़े पुत्र मुन्शी त्रिवेनीसहायने मुझे रोक लिया । गजाक सामने रक्खी और जाम भर कर दिया । मैंने इनकार किया । बोले—"तुम्हारे लिए ही तो दो-आतशा खिचवायी है । यह जौहर है ।" त्रिवेनीसहाय जी के छोटे सब मेरे मित्र थे, उनको मैं बड़े भाई के तुल्य समझता था । न दो-आतशा का मतलब समझा न जौहर का; एक गिलास पी गया । फिर गप्पबाजी शुरू हो गयी और उनके मना करते करते मैं चार गिलास चढ़ा गया । असलमें वह बड़ी नशीली शराब थी । उठते ही असर मालूम हुआ । दो मित्र साथ हुए । एकने कहा, चलो मुजरा करायें । उस समय तक न तो मैं कभी वेश्या के मकान पर गया था और न कभी किसी वेश्या को अपने यहाँ बुलाकर बात चीत की थी; केवल महफिलों में नाच देख कर चला आता था । शराबने इतना जोर किया कि पाँव जमीन पर नहीं पड़ता था । एक खूँड मेरे हाथ में था । एक वेश्या के घर में जा घुसे । कोतवाल साहब के पुत्र को देखकर सब सलाम करके खड़ी हो गयीं । घरकी बड़ी नायिका को हुकुम हुआ कि मुजरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजाया जाय। उसकी नौची के पास कोई रुपए देने वाला बैठा था। उसके आने में देर हुई। न जाने मेरे मुँह से क्या निकला। सारा घर काँपने लगा। नौची घबराई हुई दौड़ी आयी और सलाम किया तब मुझे किसी अन्य विचार ने आघेरा। उसने क्षमा माँगने के लिए हाथ बढ़ाया और मैं-"नापाक नापाक" कहते हुए नीचे उतर आया। यह सब पीछे साथियों ने बतलाया। नीचे उतरते ही घरकी ओर लौटा, बैठक में तकिये पर जा गिरा और बूट आगे कर दिये जो नौकरने उतारे। उठकर ऊपर जाना चाहा परन्तु खड़ा नहीं हो सकता था। पुराने भृत्य बूढ़े पहाड़ी पाचकने सहारा देकर ऊपर चढ़ाया। छत्त पर पहुँचते ही पुराने अभ्यास के अनुसार किवाड़ बन्द कर लिये और बरामदे के पास पहुँचा ही था कि उलटी होने लगी। उसी समय एक नाजुक छोटी उङ्गलियों वाला हाथ सिर पर पहुँच गया और मैंने उलटी खुल के की। अब शिवदेवी के हाथोंमें मैं बालकवत् था, कुल्ला करा; मेरा मुँह पोंछ ऊपर का अँगरखा, जो खराब हो गया था, बैठे बैठे ही फेंक दिया और मुझे आश्रय देकर अन्दर ले गयी। वहाँ पलँग पर लेटा कर मुझपर चादर डाल दी और साथ बैठ कर माथा और सिर दबाने लगीं। मुझे उस समय का करुणा और शुद्ध प्रेम से भरा मुख कभी नहीं भूलेगा। मैंने अनुभव किया मानो मातृ शक्ति की छत्रच्छाया के नीचे निश्चिन्त लेट गया हूँ। पथरायी हुई आँखें बन्द हो गयीं और मैं गहरी नींद सो गया। रात के शायद एक बजा था जब मेरी आँख खुली। वह चौदह पन्द्रह बरस की बालिका पैर दबा रही थी। मैंने पानी माँगा। आश्रय देकर उठाने लगी, परन्तु मैं उठ खड़ा हुआ। गरम दूध अँगीठी पर से उतार और उसमें मिश्री डाल कर मेरे मुँह को लगा दिया। दूध पीने पर होश आया।

उस समय अंग्रेजी उपन्यास (नाव्हल्स) मगज में से निकल गये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गुसाईं *जी के खींचे दृश्य सामने आखड़े हुए। मैंने उठकर और पास बैठा कर कहा— 'देवी ! तुम बराबर जागती रहीं और भोजन तक नहीं किया। अब भोजन करो।" उत्तर ने मुझे व्याकुल कर दिया। परन्तु उस व्याकुलता में भी आशा की झलक थी। शिवदेवी ने कहा—"आप के भोजन किये विना मैं कैसे खाती। अब भोजन करने में क्या रुचि है ?" उस समय की दशाका वर्णन लेखनी द्वारा नहीं हो सकता। मैंने अपनी गिरावटकी दोनों कहानियाँ सुना कर देवी से क्षमा की प्रार्थना की परन्तु वहाँ उनकी माता का उपदेश काम कर रहा था—"आप मेरे स्वामी हो, यह सब कुछ सुनाकर मुझपर पाप क्यों चढ़ाते हो ? मुझे तो यह शिक्षा मिली है कि मैं आप की नित्य सेवा करूं।" उस रात बिना भोजन किये दोनों सोगये और दूसरे दिन से मेरे लिए जीवन ही बदल गया।

वैदिक आदर्श से गिरकर भी जो सतीत्व धर्म का पालन पौराणिक समय में आर्य महिलाओं ने किया है, उसी के प्रताप से भारत भूमि रसातल को नहीं पहुंची और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति अब तक विद्यमान है—यह मेरा निजका अनुभव है। भारत माता का ही नहीं, उसके द्वारा तहजीब (सिविलिजेशन) की ठेकेदार संसार की सब जातियों का सच्चा उद्धार भी उसी समय होगा जब आर्यावर्त की पुरानी संस्कृति जागने पर देवियों को उनके उच्चासन पर फिर से बैठाया जायगा।

स्त्री-औदार्य का एक और दृष्टान्त देकर अपनी संसार यात्रा को आगे ले चलूँगा। छावनी के पारसी मद्य-विक्रयी का बिल बढ़ता

---

* गोस्वामी तुलसीदास जी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही जा रहा था। दूसरे ही दिन उसका लगभग तीन सौ का बिल आ पहुँचा। उस दिन उसे तीन चार दिन की छुट्टी लेकर टाल दिया। मुझे चिन्ता तो थी ही, शिवदेवी जी ने भोजन कराते समय मेरी चिन्ता का कारण पूछा। अब तो कोई बात आपस में गुप्त रह नहीं सकती थी। वेद के उपदेशानुसार मानो मेरा विवाह ही पिछली रात हुआ था। मैंने सब कुछ स्पष्ट कह दिया। देवी ने कुल्ला करवा के हाथ मुँह धुलवाये और अपना भोजन पाने से पहले ही अपने हाथ के सोने के कड़े उतार दिये। मैं चकित रह गया—"देवी! यह कैसे हो सकता है? तुम्हें आभूषित करने के स्थान में तुम्हें आभूषणों से रहित करने का पाप कैसे लूँ?"

इस समय मुझे ठीक संस्कृत कविकी कल्पना के अनुसार दृश्य जँचा और मैंने जान लिया कि पतिव्रता देवी पति की स्वास्थ्यरक्षा के समय माता, विपत्ति के समय भगिनी और उसे सन्तान-सुख पहुँचाने के लिए धर्मपत्नी का रूप धारण करती है। देवी ने दूसरी जोड़ी दिखा कर कहा—"एक जोड़ी पिता ने और दूसरी श्वसुर महोदय ने दी थी। इनमें से एक जोड़ी व्यर्थ पड़ी है। यह मेरा माल है और जब तन भी आप का है तो इसके लेनेमें क्यों संकोच है। आपकी चिन्ता दूर करने का यह महँगा सौदा नहीं।" शब्द पंजाबी के थे और उनके अनुवाद में कुछ मुझसे बढ़ाया भी गया होगा; परन्तु भाव यही था। कड़े बेच कर मैं बिल अदा कर चिन्ता रहित हो गया; प्रलोभन से बचने के लिए शेष रुपये देवी की सन्दूकची में रख दिये और मन में पक्का निश्चय कर लिया कि जब कमाने लग जाऊँ तो व्यय किये हुए धन को फिरसे आभूषणों में मिला दूँगा।

आचार्य का आदेश पूरा हो रहा है

लाहौर में पहिली रात सोकर आंखें खोलीं तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी नये जगत् में प्रवेश किया है। शौचादि से निवृत्त होने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मन में उत्साह और शरीर में स्फूर्ति का स्पर्श होने लगा। भ्रमण के लिये बाहर निकला और बिना प्रयास ही, गोलबाग का रास्ता पकड़ा। दो मील तेज चलकर लौटने के बाद आध घण्टा वाटिका में बैठकर आत्मिक आनन्द लिया। साम्प्रदायिक उपासना विधियों से मैं अपरिचित न था परन्तु उस समय रचना में रचयिता को ढूंढ़ते हुए मुग्ध हो गया। आध घण्टे पीछे धीरे धीरे धरती पर पग रखते हुए अपने डेरे पर लौटा।

उसी दिन नियमपूर्वक ला क्लास (कानूनी जमायत) में नाम लिखवाकर पहले पाठ में शरीक हुआ, और रात को नियमपूर्वक कानूनी किताबों का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया। तीसरे दिन आदित्यवार था। प्रातः आर्यसमाज मन्दिर में हरिकीर्तन का आनन्द लिया। दो मुसलमान रवाबी भजन गाया करते थे। व्याख्यान क्या था, चाऊचाऊ का मुरब्बा। कहीं पौराणिक और ईसाई मतों का खण्डन, कहीं देशोन्नति के लिए अपील, कहीं विधवा विवाह का (नियोग नाम से) मण्डन और कहीं नित्य हवन के लिये दलीलें। शाम को ब्राह्म मन्दिर में गया। वहां भी वही रवाबी गा रहे थे। उनके तराने समाप्त होने पर साधारण ब्राह्म समाज के आचार्य शिवनाथ शास्त्री वेदी पर आये। ईश्वर प्रार्थना के समय उनकी शान्त मूर्ति, उनके हृदय वेधक उच्चारण और उनके प्रेमरस में पगे हुए शब्दों ने मुझे आकर्षित किया। उनके धर्मोपदेश का विषय था—"भक्ति का महत्त्व" और मैं था बिछुड़े हुए से मिलने का प्यासा। इतना प्रभावित हुआ कि ब्राह्म समाजके सम्बन्ध में जितनी पुस्तकें भी उस समय मिलीं सब खरीद लीं, और अपने कमरे में पहुंच एक लघु पुस्तक (पैम्फलेट) को उसी रात समाप्त करके सोया।

पांच छः दिन इन्हीं पुस्तकों का स्वाध्याय, कानूनी पढ़ाई के साथ, आधे समय का हिस्सेदार बनता रहा। सीधी सड़क चलते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलते एक जगह रोड़ा अटक गया। ला० काशीराम उस समय नवविधान समाज के मुखिया थे। उन्होंने पुनर्जन्म के खण्डन में कोई लघु पुस्तक लिखी थी। ब्राह्म समाज के साहित्य में जीवात्मा की उत्पत्ति अर्थात् उसका आदि, परन्तु साथ ही उसकी अनन्त उन्नति का, सिद्धान्त समझ में न आया। मैं काशीराम जी के मकान पर गया। उन्होंने मेरी शंका सुन कर अपनी लघु पुस्तक पढ़ने को दी। मैंने उसे डेरे पहुंचते पहुंचते मार्ग मे ही पढ़ लिया। दूसरी बार फिर उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा, और जो शंकायें सूझीं उन्हें नोट कर लिया। मुझे चैन कहां था, उसी शाम दफ्तर का समय समाप्त हुआ समझ कर ला० काशीराम के घर पहुंचा। आध घण्टा प्रतीक्षा करने पर भी वह न आये। उनके छोटे भाई भक्त माधोराम आर्य समाजी थे। उन्हें कह दिया कि अगली सुबह को अवश्य पहुंचूगा, इसलिये अपने भाई से घर ठहरने के लिये निवेदन कर दें। दूसरे दिन काशीराम जी मेरा इन्तजार कर रहे थे। मैंने अपनी शंकाएं पेश कीं। उन्होंने उत्तर में मुझे बाबू केशवचन्द्र सेन और बाबू प्रतापचन्द्र मजूमदार निर्मित ग्रन्थों के पढ़ने की सम्मति दी। मैं उन ग्रन्थों को पहले ही पढ़ चुका था। तब उन्हें मेरी शंकाओं को सुनना पड़ा। ब्राह्म समाजी उत्तरों से मेरी तसल्ली न हुई, उलटा पुनर्जन्म एवं कर्म फल के सिद्धान्त पर निश्चय और भी दृढ़ हो गया। तब पादरी स्काट के साथ आचार्य दयानन्द के शास्त्रार्थ का स्मरण आया। मैं सीधा बच्छोवाली के आर्यसमाज-मन्दिर की ओर सत्यार्थप्रकाश खरीदने के विचार से चल दिया। विक्रय का पुस्तक भण्डार बन्द था। चपरासी ने कहा कि ला० केशवराम पुस्तकाध्यक्ष के आने पर पुस्तक मिल सकेगी। मैंने उनके घरका पता लिया और दो घण्टोंकी आवारागर्दी के पीछे उनका घर ढूंढ़ निकाला। केशवजी घर न थे। बड़े तार घर गये थे, क्योंकि वह तार बाबू (सिगनलर) का काम करके ही आजीविका प्राप्त करते थे। मैं तारघर का पता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाकर वहां पहुंचा। उस समय वह छुट्टी में जलपान के लिये घर गये थे। मैं फिर उनके घर लौटा तो वह तार घर लौट गये थे। पूछने से पता लगा कि वह डेढ़ घण्टे में ड्यूटी से लौटेंगे। मैंने वह डेढ़ घण्टा पास की गली के अन्दर मटरगश्त में बिताया। एक सज्जन बाबू केशवराम जी के घर में जाते दिखायी दिये। मैंने उन्हें जा घेरा--"महाशय जी ! मुझे सत्यार्थप्रकाश खरीदना है।" उत्तर मिला--निवृत्त होकर कुछ खालूं फिर आपके साथ समाज मन्दिर चलूंगा।" मैंने अपना सारे दिन का इतिहास सुनाकर बाहर ठहरने की इच्छा प्रगट की। केशवजी का मुख सहानुभूति से चमक उठा और उन्होंने कहा--"महाशयजी ! चलिए पहले आपको पुस्तक दे दूं। जबतक आपका काम न कर लूं मुझे इत्मीनान न होगा।"

समाज मन्दिर में पहुंचने पर सत्यार्थप्रकाश मेरे हाथ में रक्खा गया। मैंने मूल्य दिया और इस प्रकार आह्लादपूर्वक लौटा मानों कोई बड़ा कोश हाथ लग गया है। मेरे साथी मुझे प्रातःकाल के भोजन में सम्मिलित न देख विस्मित थे। जब मैं पहुंचा तो सायंकाल का भोजन परसा जा रहा था, खूब भूख लगी थी; भोजन रुचिपूर्वक किया। शाम को भ्रमण के लिये गया ही नहीं, लैम्प जला, सत्यार्थ-प्रकाश की भूमिका समाप्त कर प्रथम समुल्लास के स्वाध्याय में लग गया।

आर्य समाज में प्रवेश

सम्वत् १६४१ का माघ मास और आदित्यवार का दिन है। नास्तिकपन के गढ़े से मैं निकल चुका हूं। धर्म विषयक गहरे आन्दोलन के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश का पाठ दिन रात आरम्भ कर चुका हूं। अनारकली के पास रहमत खां के अहाते में एक तीन कमरे वाली कोठी के बाईं ओर के कमरे में मैं प्रातः ६ बजे कुरसी पर बैठा हूं। सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास सामने खुला पड़ा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, किन्तु मैं हाथ पर सिर रखे किसी गम्भीर विचार में निमग्न हूं। इतने में कमरे का द्वार खुला और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया। उनके पैर की आहट ने मुझे विचारनिद्रा से जगा दिया। वह सुन्दरदास जी रावलपिण्डीके राजक्रान्तिक आन्दोलन में फंसे वकील, लाला अमोलकराम के भाई और आर्यजाति की उन्नति के दृढ़ पक्षपाती थे। सुन्दरदास भी जानते थे कि आस्तिक बनने के पश्चात् मेरा अधिक झुकाव ब्राह्म समाज की ओर हो रहा है। उन्होंने पूछा—"किस चिन्ता में हैं, कहिये कुछ निश्चय न हुआ ?" मेरी ओर से उत्तर मिला—"पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने फैसला कर दिया, आज मैं सच्चे विश्वास से आर्यसमाज का सभासद बन सकता हूं।" इस उत्तर नें सुन्दरदास जी के मुख की कान्ति को ऐसा उज्ज्वल कर दिया कि उसका तत्काल ही मुझ पर प्रभाव पड़ा। मैं आपने ४० वर्षके आर्यसामाजिक जीवनमें जब जब किसी संशयात्मक व्यक्तिको संशय सागरके किनारेपर पहुंचा कर श्रद्धा और विश्वासकी रमणीय वाटिकामें विश्राम करानेका साधन बना हूँ तब तब कई बार मैंने इस प्रकार के आह्लाद का अपने अन्दर अनुभव किया है।

सुन्दरदास जी को हम सब "भाई सुन्दरदास" कहते थे। यद्यपि उनके नाम के साथ इस शब्दका प्रयोग उनके मित्रों ने हंसी-दिल्लगी से किया था, किन्तु जिस प्रेम से वे अपने मित्रोंकी सेवा किया करते थे और जिस प्रकार का भ्रातृभाव उनके अन्तःकरण को पवित्र कर रहा था, उसके बाह्य बर्ताव ने उन्हें सचमुच अपने मित्रों का भाई ही बना दिया था। भाईजी वहीं जम गये। मेरे स्थानमें ही स्नानादि नित्य क्रियाओं से निबृत्त होकर मुझे साथ ले आर्य समाज की ओर चल दिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर आर्यमन्दिर में पहिली वक्तृता

भाई सुन्दरदास जी के साथ मैं शाह-ए-आलमी दरवाजे से नगर के अन्दर प्रवेश करके सीधा आर्य समाज मन्दिर में पहुंचा। वच्छोवाली का वर्तमान मन्दिर ही पुराना समाज मन्दिर है। इस समय बहुत कुछ परिवर्तन होने पर भी उसकी पुरानी दशा आंखों के आगे स्पष्ट घूम रही है। द्वार के अन्दर जाते ही बाईं ओर बड़े आंगन के पास वाले दालान में मेज रहता था। उसके नीचे आंगन में बड़े तख्त पर ईश्वरोपासना करनेवाले के लिये स्थान था। दालान के सामने खड़े होकर बाईं ओर की छोटी सी कोठरी में पुस्तकालय था।

सम्वत् १९४१ के माघ से मैं लाहौर पहुंचकर प्लीडरी परीक्षा की तय्यारी कर रहा था। तब से यह नियम था कि प्रत्येक रविवार को प्रातः आर्यसमाज और सायंकाल ब्राह्म समाज के अधिवेशनों में सम्मिलित होता। किन्तु इस दिन कुछ भाव ही और था, और आर्यसमाज मन्दिर की छबि भी कुछ निराली ही दिखाई देती थी। वही दोनों रबाबी (गायक) जिनको हर सप्ताह ब्राह्म और आर्य मन्दिर में बिहारीलाल की संगीतमाला तथा नानक और कबीर के ग्रन्थों में से भजन गाते सुनता था, आर्यमन्दिर में सारंगी के अलाप और तबले की थाप के साथ भैरवी की तान तोड़ रहे थे।

"उतर गया मेरे मनदा संसा जब तेरा दरसन पायो" कैसे समय के अनुकूल शब्द थे जो मेरे कानों में पड़े।

मैं सामने वाली दीवार के पास बैठ ही रहा था कि आर्यसमाज लाहौर के प्राणदाता स्वर्गीय लाला साईंदास जी के कान में भाई सुन्दरदास जी ने कुछ कहा, शायद यह बतलाया कि मैं ऋषि दयानन्द की शरण ग्रहण कर चुका हूँ। उस शक्तिशाली मूर्ति को कौन भूल सकता है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समय भारतवर्ष में चारों ओर विदेशी सभ्यता की लहर ने प्राचीन सभ्यता को छिपाना आरम्भ किया था, उस समय ऋषि दयानन्द के उपदेश पर जिन कुछ महानुभावों ने स्वदेशी का आदर आरम्भ किया उनमें लाला साईंदासजी अग्रणी थे। किसी के शिर पर स्वदेशी पटका, किसी का कुरता स्वदेशी गबरून का. किन्तु लाला साईंदास शिर से पैर तक स्वदेशी रंग में ही रंगे होते थे। शिर पर लुधियाने की सादी लुंगी, जिसके नीचे तीक्ष्ण मर्मवेधक आंखें जो दूसरेके अन्तःकरण तकके भावोंको समझ लेतीं। गले में सादा गबरून का कुरता, जिस पर जोड़ी का सादा चोगा पड़ा होता—और उस चोगे की घुंडी में गबरून का रूमाल बंधा हुआ, कुञ्जियों के गुच्छे को आश्रय देता, जो कन्धे के ऊपर पीछे को लटक जातीं। लाला साईंदास जी के पैर में मैंने सदैव सादा पञ्जाबी जूता देखा। लालाजी पञ्जाव चीफकोर्ट में अनुवादक (ट्रैंसलेटर) थे। आर्यमन्दिर तथा चीफ कोर्ट की पोशाक में भेद केवल इतना होता कि जहां समाज मन्दिर में स्वदेशी मोटी धोती पहिन कर आते वहां चीफकोर्ट जाते हुए स्वदेशी जोड़ी का पाजामा पहिन लेते।

लाला साईंदास जी उपासना की चौकी की बाईं ओर बैठा करते थे। उनकी दृष्टि मुझ पर देर से पड़ा करती थी। भाई सुन्दरदासजी की बात सुनते ही लालाजी ने दो तीन वार जोर से मुझे अपने पास बुलाने का इशारा किया। ऐसे समय में लालाजी की मोंछों का फड़कना उनके अन्दर एक विचित्र प्रकार के तेज की सूचना दिया करता था। मैं खसक कर लालाजी के पास जा बैठा, और उन्होंने बड़े प्रेम से पीठ पर हाथ धरकर मुझे आशीर्वाद दिया। उसी समय भाई दित्तसिंह जी ने पञ्जाबी भाषा में बड़ा रोचक व्याख्यान आरम्भ कर दिया। भाई दित्तसिंह उन दिनों लाहौर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज के बड़े उत्साही सभासद थे और आदित्यवार को प्रायः व्याख्यान दिया करते थे। भाई दित्तसिंह जी ने अपने व्याख्यान की समाप्ति पर मेरे आर्यसमाज में प्रवेश का जिक्र करते हुए मुझ से अपने तथा भाई जवाहिरसिंहजी मन्त्री के पुराने सामाजिक सम्बन्ध का वर्णन किया। उसके पश्चात् भाई जवाहिरसिंह जी उठे। वह उस समय लाहौर आर्यसमाज के मन्त्री थे। यह वही भाई जवाहिर सिंह थे, जो पीछे आर्यसमाज के नेताओं की अमृतसरके "हर मन्दिर" के प्रबन्धकर्त्ता बनने की धुन में आर्यसमाज के शत्रु तथा अपने पूर्व गुरु ऋषि दयानन्द के निन्दक बन गये थे। किन्तु उस समय भाई जवाहिरसिंह जी ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के ऐसे भक्त थे कि जहां श्री साईंदास जी तथा राय मूलराज, एम. ए. अंग्रेजी तथा उर्दू में ऋषि से पत्रव्यवहार करते वहां भाई जवाहिरसिंह सदैव आर्य भाषा में अपने गुरु को पत्र लिखा करते, अस्तु।

भाई जवाहिरसिंह जी उठे और मेरे आर्यसमाज-प्रवेश के विषय में बहुत कुछ कह कर समाप्ति पर कह दिया कि ये अपने कुछ विचार उपस्थित सज्जनों के समक्ष प्रकट करेंगे। इस घोषणा ने मुझ पर मानो वज्रपात कर दिया। इससे पहिले मैं विद्यार्थियों की वाग्वर्धिनी सभाओं में तो बोला था, न्यायालयों में न्यायाधीशों के सामने मुकद्दमों में भी वक्तृताएं की थीं, किन्तु सर्वसाधारण के किसी बड़े समूह के सामने व्याख्यान नहीं दिया था, पहिले से कुछ सोचने का भी अवसर नहीं मिला था, इसलिये हैरान था कि क्या बोलूं। उठते उठते यही सूझी कि अन्दर के भाव प्रकट कर दूं। मुझे उस समय की वक्तृता का पूरा स्मरण तो है नहीं किन्तु २० वा २५ मिण्टों में मैंने जो कुछ कहा उसका सारांश यह था कि हम सबके कर्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिये और इसलिये जो वैदिक धर्मके एक एक सिद्धांत के अनुकूल अपना जीवन नहीं ढाल रहा है उसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशक बनने का साहस नहीं करना चाहिये।''

मुझे याद है कि मैंने समाप्तिपर यह भाव भी प्रकट किया था कि **भाड़े के टट्टुओं से धर्मका प्रचार नहीं हो सकता, इस पवित्र कार्य के लिये स्वार्थत्यागी पुरुषों की आवश्यकता है।**

जिस दिन मैंने व्याख्यान दिया उस दिन आर्यमन्दिर में अमृतसर-निवासी मास्टर हीरासिंह जी भी विद्यमान थे। वह लाहौर के ट्रेनिङ्ग स्कूल में अध्यापकी की शिक्षा पाने के लिए गये हुए थे। जब दो तीन वर्षों के पश्चात् मास्टर हीरासिंह जी जालन्धर अध्यापक बनकर आये, तो उन्होंने मुझे बतलाया कि मेरी पहिली वक्तृता सुनकर जब लाला साईंदास जी अपने घर आये तो उक्त मास्टर जी तथा अन्य तीन चार आर्यसामाजिक सभ्यों के सामने उन्होंने कहा :—

"आर्यसमाज में यह नयी स्पिरिट (स्फूर्त्ति) आयी है। देखें यह आर्यसमाज को तारती है या डुबो देती है।''

मुझे अपने प्रवेश से पहिले का प्रत्यक्ष कोई हाल तो मालूम नहीं, किन्तु इतना अवश्य ज्ञात है कि उस समय सिवाय एक वैतनिक उपदेशक के और कोई उपदेशका काम नहीं करता था और सिवाय दोनों मुसल्मान रवाबियों के लाहौर आर्यसमाज का कोई सभासद् भी स्वयम् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के भजन गायन नहीं किया करता था।

मांसभक्षणका परित्याग

लाहौर में जब से मैं इस बार आया तब से ही दोनों काल भ्रमणार्थ बाहर जाया करता। सायंकाल को तो भोजन के पश्चात् अपने कानूनी सहपाठियों के साथ बातचीत करते हुए मैं धीरे-धीरे घूमा करता था, किन्तु प्रातःकाल नित्य लम्बा चक्कर लगाता, जिसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी दूरतक दौड़ना भी शामिल था। एक दिन, होली से चार पांच दिवस पहिले मैं दूर से भ्रमण करता हुआ अनुमान ५ बजे अनारकलीमें पहुँचा। बाहर स्वच्छ वायु का सेवन करते हुए वाटिकाओं के सुन्दर दृश्य देखे थे।

अनारकली में सामने से एक मनुष्य के सिर पर मांस का टोकरा दिखायी दिया। टोकरे का उठाने वाला मनुष्य बोझ के दबाव से बचने के लिये भागा जाता था, और टोकरे में भेड़-बकरियों और बकरों की खाल, उधड़ी हुई टांगें, बाहर लटकती हुई टांगें एक भयानक घृणित दृश्य उपस्थित कर रही थीं। न जाने क्यों, उस दिन इस भीषण दृश्य ने मेरा दिल दहला दिया। ऐसा प्रतीत होता, था कि वह लटकती हुई टांगें, मेरे अन्दर के तिरोहित करुणारसको अपील कर रही हैं। मैं बाल्यावस्था से ही मांसाहारी था; पिता जी क्षत्रिय के लिये मांसभक्षण स्वाभाविक समझते थे। फिर इस आकस्मिक करुणारस का मतलब उस समय कुछ भी समझ में न आया। उस टोकरे की ओर टकटकी बंध गयी, कुछ सोचता हुआ मैं खड़ा हो गया, और उस समय तक टोकरे पर दृष्टि लगी रही जबतक कि वह आंखों से ओझल न हो गया। तब धीरे-धीरे पैर बढ़ाते हुए चिन्ता में निमग्न रहमतखां के अहातेवाले डेरे में पहुँचा।

स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर **सत्यार्थप्रकाश** को हाथ में लिया ही था कि अपना एक और कर्त्तव्य याद आ गया। सप्ताह में एक रात हमारे ही डेरे के एक बड़े कमरे में संगत समाज (युनिअन क्लब) का अधिवेशन हुआ करता था जिस में विविध विषयों पर परस्पर विचार होता था। उस रात के अधिवेशन में प्रारम्भिक वक्तृता मेरी थी। उसकी तय्यारी में प्रातःकाल का दृश्य भूल गया। तीसरे पहर तक कानून की पढ़ाई में लगा रहा, जिसके पश्चात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थप्रकाश की बारी आयी । उस दिन दशम समुल्लास में से भक्ष्याभक्ष्य के विषय का आरम्भ था । ज्यों-ज्यों मांसभक्षण के दोष पढ़ता गया त्यों त्यों प्रातःकाल का दृश्य मूर्तिमान् होकर मेरे समक्ष खड़ा होता गया । एक एक शब्द ध्यानपूर्वक पढ़ते पढ़ते भोजन का समय आ पहुँचा । अपने विचार में निमग्न हाथ पाँव धोकर मैं भी भोजनगृह में आ बैठा ।

अन्य खाद्य वस्तुओं के साथ ही मांस भी कटोरे में आया ही था कि उसे देख कर उस दिन ऐसी घृणा हुई कि कांसे के कटोरे को उठा दीवार पर फेंक मारा । कटोरा टुकड़े-टुकड़े हो गया । मेरे साथी सब घबराये—"हैं ! हैं ! क्या तरकारी में मक्खी पड़ गयी ? क्या था ? ओ मिश्शर ! कमबख्त यह क्या किया......"

मैंने सब को रोक कर कहा—"मिश्शर विचारे को कुछ मत कहो, एक आर्य के मत में मांस भक्षण भी महापापों में से एक है, मैं मांस का अपनी थाली में रक्खा जाना सह नहीं सकता ।" उस समय तो मेरे सब भाई ऐसे प्रभावित हुए कि चुप हो रहे, किन्तु पीछे से कहते रहे कि कटोरा टुकड़े-टुकड़े करने के स्थान में उसे मैंने केवल उठवा ही क्यों न दिया । उन्हें तो मैंने कुछ उत्तर न दिया किन्तु मन में समझता था कि मैंने अपने कायरपन के कारण ऐसा किया । बचपन से पड़े हुए अभ्यास और संस्कार की बेड़ियों को शान्ति से काटने की शक्ति किन्ही विरले बहादुरों में ही होती है । उस शाम भोजन बहुत कम कर सका । दूसरे दिन से निरामिषभोजियों की संख्या बहुत बढ़ गयी क्योंकि होशियारपुर के महाशय रामचन्द तथा लाला मुकुन्दराय, दोनों निरामिषभोजी थे । उसके पश्चात् कभी भी मांस भोजन की रुचि तक नहीं हुई और कुछ दिनों के पश्चात् ही मांसभक्षण से ऐसी घृणा हुई कि मेरे लिये न केवल उस पंक्तिमें बैठना असह्य हो गया जिसमें मांस परोसा जाय, परन्तु मांसाहारियों के चौके में खाने से भी चित्त खिन्न होने लगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालन्धर आर्य-समाज में पहिला व्याख्यान

देवराज जी यद्यपि आयु में मुझसे छोटे हैं किन्तु आर्य-समाजमें पहिले प्रविष्ट होने के कारण वह मेरे जेठे आर्य-भाई हैं । फिर भी उस समय उनका समाज, लड़कों का समाज ही समझा जाता था। मैं मुखतारी की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर एक वर्ष काम भी कर चुका था। मैं इसीलिये बुलाया गया था कि मेरे व्याख्यान को सुनकर सर्वसाधारण यह समझ लेंगे कि अब गृहस्थ व्यावहारिक पुरुष भी समाज में सम्मिलित हो रहे हैं।

मेरे व्याख्यान का विज्ञापन दिया गया। कपूर्थलाराज के वकील-खाने के सामने से जरा आगे चलकर मुरलीमलपुरी की धर्म्मशाला प्रसिद्ध थी; उसी को किराएपर लेकर आर्यसमाज के अधिवेशन प्रति आदित्यवार को हुआ करते थे । मेरा व्याख्यान भी वहीं हुआ। व्याख़्यान का विषय था—"बालविवाह के दोष और ब्रह्मचर्य की महिमा।" भाई देवराज जी की मनोकामना सिद्ध हुई। बाबू मदन-गोपाल, बाबा सलामतराय आदि वकील तथा अन्य बहुतसे प्रतिष्ठित शिक्षित पुरुष व्याख्यान सुनने के लिये आये। स्थान ऊपर से नीचे-तक श्रोताओं से खचाखच भरा पड़ा था। व्याख़्यान भी 'कामयाबी' से समाप्त हुआ। किन्तु जब व्याख्यान के पश्चात् चौमुहानीपर पहुँचे और कुछ वकील खड़े होकर मुझे मेरे व्याख्यानपर "मुबारकबाद" दे रहे थे, उसी समय देवराज जी के "सिर्त" ❀ ने दूसरी ओर से मुझे बधाई दी—

❀ पञ्जाब में पुरोहित के अतिरिक्त प्रत्येक कुल का एक रोटी बनानेवाला ब्राह्मण लागी होता है जिसका परिवार विवाहादि संस्कारोंपर यजमानों के यहां रोटी बनानेका काम करता है। ऐसे लागी को "सिर्त" कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुखी रहो जजमान ! देवराज जी के पुत्तर गन्धर्वराज दी फुड़माई लाला भवानीदास मुन्सफ दी पुत्री नाल हो गई है। थुआनू बहुत २ बधाइयाँ"—सिर्त विचारा अभी वधाई देही रहा था कि बाबू मदनगोपाल प्लीडर बड़े जोर से खिलखिलाकर हँस पड़े !—"वाह महाशयजी ! मुझपर तो आपके व्याख्यान का खूब असर पड़ा। वाह ! वाह !! वाह !!!"

बाबू मदनगोपाल की हँसी रुकती ही न थी। उनकी हँसी ने केवल 'सिर्त' जी को ही अचम्भे में न डाला प्रत्युत रास्ते चलतोंको भी रोक लिया।

पाठक हैरान होंगे कि बाबू मदनगोपाल जी की हँसी पागलपन की हद्दतक क्यों पहुँच गयी ? बात यह थी कि उस समय देवराज जी के बड़े पुत्र चि० गन्धर्वराज की आयु शायद एक वर्ष की थी और लाला भवानीदास बी० ए० मुन्सिफ की पुत्री की आयु सवा वर्ष की। मैं और देवराज जी तो इधर बालविवाह को रोकने और ब्रह्मचर्यका प्रचार करने में लगे हुए थे और उधर उनके पिता राय शालिग्राम जी एक वर्ष की आयु के अपने पोते की सगाई सवा वर्ष की लड़की के साथ करने के शुभ कार्य में निमग्न थे। इसपर किसी दर्शकको जितनी भी हंसी आती थोड़ी थी। बाबू मदनगोपाल तो हमारी हँसी उड़ाते हुए विदा हुए और मैं तथा देवराज जी बहुत लज्जित और उदासीन होकर घरको लौट आये। किन्तु हो क्या सकता था; उस समय मौनावलम्बन ही करना पड़ा।

यहां कालक्रमकी विधिका अनुसरण छोड़कर मैं इतना लिख देना आवश्यक समझता हूँ कि जब लड़के और लड़की दोनों की आयु १४ वा १५ वर्ष तक पहुँची और समधीने विवाह पर जोर दिया तो देवराज जी के दृढ़ रहने पर और यह कहने पर कि मैं अपने पुत्र का विवाह २५ वर्ष की आयु से पहिले कदापि न करूंगा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नाता टूट गया और चिरञ्जीव गन्धर्वराज का विवाह पूर्ण युवावस्था में ही एक सुयोग्या विदुषी देवी के साथ हुआ।

कांग्रेस संस्थापक मिस्टर ह्यूम

शायद उन्हीं दिनों स्वर्गीय मिस्टर ह्यूम कांग्रेस की स्थापना के लिये आन्दोलन करने लाहौर में आये थे। मुझे ज्ञात हुआ था कि जिस किसी सुशिक्षित हिन्दुस्तानी से भी वह मिलना चाहते वहां से ही उन्हें निराश होना पड़ता। न जाने कैसे मि० ह्यूम को यह निश्चय हो गया कि जो शक्ति हिन्दुस्तानियों को उनसे मिलने नहीं देती वह राय मूलराज, एम० ए० के रूप में है। शिक्षक-दलमें यह प्रसिद्ध हो रहा था कि मि० ह्यूम ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के गुप्तचर हैं जो हिन्दुस्तानियों को किसी जाल में फँसाने आये हैं। परमात्मा के सिवाय यह कौन जान सकता है कि उसमें राय मूलराज का भी हाथ था या नहीं; और उसके लिये कोई विश्वास जनक साक्षी भी नहीं है। किन्तु मि० ह्यूम ने वह चिर-स्मरणीय चिट्ठी श्री लाला साईंदास जी को लिख मारी जिसका स्मरण पंडित गुरुदत्त जीने मेरे सामने उक्त लाला जी को तीन वर्षों के पश्चात् कराया था। उस चिट्ठी में मि० ह्यूम ने यह लिखा था कि उनके माननीय मित्र स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित समाज का सभासद राय मूलराज, एम० ए० सा व्यक्ति नास्तिक कैसे हो सकता है।

शराबियों के चक्कर में

११ माघ संवत् १९४१ (२४ जनवरी सन् १८८५) की रात को मैंने, मद्यकी बची हुई बोतल तोड़कर, सदाके लिये मद्य को तिलाञ्जलि दे दी थी। लाहौर में विद्यार्थी-अवस्थाने मेरी सहायता की। जब कुछ दिन जालन्धर ठहरा तो आर्यसमाज के कामों की फंसावट ने रक्षा की। किन्तु जब मैं फिर से सभ्य समाज में मिला तब परमेश्वर के बिना मेरा और कोई रक्षक न था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन प्रातःकाल मेरे एक पुराने मद्यप मित्रके यहां दावत थी। मेरे यजमान एक्जिक्युटिव इञ्जिनियर थे । जब मैं उनके शानदार मकान की सजी हुई बैठक में पहुँचा तो दो डिप्टी कलक्टर, एक मुन्सिफ, दो तीन बड़े वकील और एक उनके हमपेशा एक्जिक्युटिव इञ्जिनियर बैठे गप्पें हाँक रहे थे । मुझे स्वप्न में भी यह नहीं सूझ सकता था कि ऐसे सभ्य पुरुष दिन दहाड़े शराब डालने का हौसला करेंगे। किन्तु मेरा पहुँचना ही था कि शोर मच गया और चारों ओर से आवाजें आने लगीं—"देखो ! खूब काबू आया है, अब इसके धर्म वर्म की खबर ले डालो। देखें, कैसे छूटता है ? इत्यादि–" मेरे हाथ पांव पकड़ लिये गये और एक महाशय प्याले में शराब भरने लगे। मैंने कहा कि मेरे अन्दर अब शराब डालना असम्भव है। भला शराबी किसी की काहे को सुनने लगे, कइयोंने हाथ पैर थामे और दो ने मुँह खोल दिया तीसरे ने प्याला उड़ेलने को आगे किया ही था कि मद्य की दुर्गन्धने अन्दर घृणा उत्पन्न की । एकदम उल्टी (कै) हो गयी और मेरे पकड़ने वालों के कपड़े खराब हो गये। वे जरा हिले कि मैं छलाँग मार कर बाहर वाटिका में आया। कूप पर जलसे भरा डोल पड़ा था; कुल्ली करके सीधा घरका रास्ता लिया। उस दिन से किसी शराबी का हौसला न पड़ा कि मुझे अपने मतमें लाने का प्रयत्न करे।

आटा फण्ड

लाहौर आर्यसमाज में संवत् १९४३ से "आटाफण्ड" बड़े जोर शोर से चला था। लाहौर से ही अन्य आर्यसमाजों ने भी "आटा-फण्ड" चलाने की शिक्षा ली थी। धर्मकार्यों के लिये इस प्रकार आर्थिक सहायता एकत्र करने की प्रथा यहां तक चली कि अब तक आर्यप्रतिनिधि सभाने गिरते पड़ते भी अपने बजट से 'आटाफण्डको' नहीं काटा। यह आटाफण्ड कैसे चला ? संवत् १९४२ की गर्मियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जब लाहौर आर्य मन्दिर की ड्योढ़ी के ऊपर वाले मकान में साप्ताहिक अधिवेशन हो रहा था, एक साधारण लम्बा दुबला साधु आया और घुटने टेक कर बैठ गया। सत्यार्थप्रकाश की कथा समाप्त होते ही उसने एक मर्मस्पर्शी वक्तृता दी और यह प्रस्ताव किया कि प्रत्येक आदित्यवार को आर्य सामाजिक सभासद् चुटकी चुटकी आटा घर घर से भिक्षा करके लावें और आर्यसमाज का काम चलावें। इसका प्रचार इतना हुआ कि दयानन्द कालिज की आमदनी का यह एक सन्तोषजनक भाग बना। बहुत से घरों में 'धर्म-घट' रख दिये गये, गृह पत्नियां प्रातःकाल आटा गूंधने से पहिले एक मुट्ठी आर्यसमाज के निमित्त निकाल कर धर्म-घटमें डालती रहीं।

रद्दी फण्ड

यह ठीक है कि धर्म-घट रखवाने का प्रचार लाहौर में पहिले पहिल स्वामी रमताराम जी ने कराया किन्तु उक्त स्वामी जी इस विचित्र विचार के निर्माता न थे। यह ख्याल पहिले श्री देवराज जी के काल्पनिक मस्तिष्क से निकला था। उन्होंने जालन्धर आर्यसमाज के मन्त्रित्व के अधिकार से अपनी अन्तरंग सभामें सबसे पहिले यह प्रस्ताव पास कराया कि सब सभासदों के मकानों में एक एक घड़ा रखा जाय जिसमें प्रातः एक मुट्ठी आटा आर्यसमाज के कामों के लिये डाला जाय। इसका नाम देवराज जी ने ही अपनी विचित्र भाषा में "चाटी सिस्टम" रक्खा क्योंकि आटा रखने के वड़े मुंह वाले घड़े को जालन्धर में 'चाटी' कहते हैं। देवराज जी की कल्पना-शक्ति की यहीं तक समाप्ति न थी। उन्होंने चाटी सिस्टम के साथ "रद्दी फण्ड" भी खोल दिया। इसका मतलब यह था कि सभासदों के घरों में महीने के अन्दर जितनी रद्दी इकट्ठी हो, वह सब आर्यसमाज का चपरासी उठा कर ले जावे और उसे बेचकर एक धन जमा कर लिया जाय। जहां तक मुझे याद है इसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रद्दी फण्ड" की आमदनी से जालन्धर आर्यसमाज के पुस्तकालय के लिये पुस्तकें तथा समाचार पत्र मंगाये जाते थे।

पं० दीनदयालु शर्मा से टक्कर

जालन्धर धर्मसभा में पंडित दीनदयालु जी का पौराणिक मत-पोषक के रूपमें आना और व्याख्यान देना मेरे लिये नयी आशाओं का केन्द्र सिद्ध हुआ। जब पंडित दीनदयालु जी ने जालन्धर धर्म-सभाकी ओरसे नौहरियों के ठाकुरद्वारे के आङ्गन में आर्यसमाज के मन्तव्योंका खण्डन आरम्भ किया उस समय मैं अपने जन्मस्थान तलवन में था। संवत् १९४४ का शायद ज्येष्ठ मास था। मेरे पास आदमी पत्र लेकर गया जिसमें लिखा था कि आर्य सभासदों को नगर में मुंह दिखाना कठिन हो रहा है। पंडित दीनदयालु जी की दूसरे पक्षको उलटे रूपमें दिखाने और उपहास में उड़ाने की शक्ति उस समय पूरे यौवन पर थी। मैं पत्र देखते ही चल दिया और १२ बजे अपने मकान पर पहुंच कर मैंने मुंशी काशीराम से सारा वृत्तान्त सुना। उन्हीं दिनों लाला तेलूमल राहों निवासी के गुणों का मुझे पता लगा। इन्होंने पंडित दीनदयालु जी के व्याख्यानों के शब्द तक नोट कर रखे थे। शहरी सभासदों ने समाज के बाहर धनाढ्यों की बड़ी शिकायत की जिन्होंने ऐसे समय में सहायता न दी। सारे शहर में प्रसिद्ध था कि आर्यों को चुल्लू भर पानी डूब मरने को नहीं मिलता; बेचारों के पास कोई उत्तर नहीं।

मैंने भोजन पीछे किया, सबसे पहिले पंडित दीनदयालु जी के नाम शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज लिखकर मुन्शी काशीराम के द्वारा भेज दिया और साथ ही अपने पत्र की नकल उक्त पंडित जी के हस्ताक्षरों के लिये भेज दी। पंडितजी ने टालने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु काशीराम भी एक मार्के का आदमी था। उसने पंडित जी के हस्ता-क्षर लेकर ही उन्हें छोड़ा। इतने पर ही सारे शहर में चर्चा फैल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। अभी हुआ कुछ नहीं और सर्व साधारण को आर्यों में जान दिखने लगी। फिर चार घण्टों के अन्दर ही दूसरे दिन के मेरे व्याख्यान के सैकड़ों विज्ञापन हस्तलिखित लग गये और ५॥ बजे अपने बहुत से आर्य भाइयों को, जो कई दिनों से मुंह छिपाये फिरते थे, साथ लेकर मैं व्याख्यान मण्डप में जा पहुंचा। मेरे पहुंचते ही धर्म-सभा के प्रधान श्री लाला हरभजराय जी बहुत सभ्यों सहित उठ खड़े हुए। व्याख्याता महाशय ने समझा कि कोई प्रतिष्ठित सनातन धर्मी आये हैं। सब के बैठ जाने पर उन्होंने फिर से एक पत्र की व्याख्या आरम्भ की, जो उनके हाथ में था। जिस पत्र की व्यवस्था वर्तमान व्याख्यान वाचस्पति श्री पंडित दीन-दयालु जी कर रहे थे वह मेरा ही भेजा हुआ था। पंडित जी ने पत्र-लेखक पर एक हंसी की बोछाड़ करके कुछ भाग छोड़ कर पढ़ना चाहा जिससे लेख की शृङ्खला टूटती और पंडित जी के पूर्व कथन का खण्डन होता था। मैंने निवेदन किया कि बीच में कुछ और भी है, वह भाग भी पढ़ दिया जाय। मेरा इतना कहना था कि खलबली मच गई। लाला हरभज जी (प्रधान धर्मसभा) ने उठकर पंडित जी के कान में कुछ कहा। पंडित जी कुछ सम्भले— और बलिहारी है उनकी योग्यता की - कि मेरी एक घण्टे की उपस्थिति में उनको सिवाय वैराग्य के और कोई विषय ही न सूझा।

पंडित जी के व्याख्यान की समाप्ति पर एक आर्य सभासद् ने उंचे स्वर से कह दिया कि दूसरे दिन पंडित दीनदयालु जी के व्याख्यानों का उत्तर आर्य समाज मन्दिर में दिया जायगा। जिस प्रकार हमारे प्रधान यहां आये है उसी प्रकार उन्हें भी पधार कर सुनना चाहिये। जोशीले सनातनियों ने शोर मचा दिया "हमारी सभा में क्यों बोलते हो, अपने यहां बोलो--इत्यादि" इस पर उत्तर मिला—"हमने सूचना दी है, सुनने का हौसला न हो तो मत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आना।" सर्वसाधारण खिल खिला कर हंस पड़े और सभा विसर्जन हुई। सारे नगर में ढोल पिट गया—"यह आर्य बड़े जबर्दस्त हैं, दूसरे के घर पहुंच कर खबर ले डालते हैं।"

भला कोई पूछे कि पहिले क्या हुआ था और अब क्या हो गया। किन्तु दुनिया भेड़ियाधसान है, जिधर एक भेड़ चल पड़े उसी के पीछे शेष भेड़ें भी चल पड़ती हैं। और सचाई को कोई पूछता नहीं जब तक उनके फैलाने का प्रयत्न न किया जावे।

दूसरे दिन आर्य समाज मन्दिर में सहस्रों की उपस्थिति थी। कुछ नगर के सभ्य पंडित दीनदयालु जी को लाने गये किन्तु डेरे पर जाकर उन्हें पता लगा कि पंडित जी छावनी चले गये हैं। मैंने उस दिन का व्याख्यान समाप्त करके कह दिया कि यदि पंडित जी दूसरे दिन आये तो उनके साथ धार्मिक विषयों पर विचार होगा, नहीं तो एक अनोखा व्याख्यान होगा। पंडित जी की ओर से तो कोरा जवाब आया परन्तु आर्य समाज की ओर से विज्ञापन लग गये जिनमें व्याख्यान का विषय रखा गया—"चाऊ चाऊ का मुरब्बा।" इस विचित्र शीर्षक को देख कर सर्वसाधारण ऐसे उत्सुक हुए कि समाज मन्दिर की छत और दीवारें तक मनुष्यों से भर गयीं। पंडित जी के व्याख्यान क्रमबद्ध किसी विशेष विषय पर नहीं हुए थे, इसलिए उनका नाम यही रख कर उनके उत्तर दिये गये।

गोकरुणानिधि का भक्त—पारसी

एक बात मुझे बम्बई के सम्बन्ध में और याद है। जब मैं घर लौटने के लिये रेलवे स्टेशन पर पहुंचा तो वहां एक पारसी महाशय पहिले से मौजूद थे। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझे हार पहिनाया और कुछ केले भेंट किये। मैं कुछ विस्मित सा हुआ तो उन्होंने कहा—"महाशय ! आप विस्मित क्यों होते हैं ? मैं स्वामी दयानन्द का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतानुयायी तो नहीं हूँ पर उनकी गोकरुणानिधि का भक्त हूँ। आर्य समाज स्वामी जी के जिस उपदेश को भूला हुआ है, उसका मैं अनुकरण कर रहा हूँ।" यह कह कर उन्होंने गोरक्षा विषय के अपने ट्रैक्ट और अपीलें दीं और बतलाया कि वे गवर्नमेंट से गोहत्या हटाने के लिए निवेदन करना चाहते हैं। मेरे पास अब वह विज्ञापन नहीं है इसलिए कह नहीं सकता कि वह महाशय इस समय के प्रसिद्ध गोभक्त श्रीमान् जस्सावाला ही थे वा कोई अन्य सज्जन।

डिप्टी कमिश्नर से धर्म चर्चा

मैं प्रायः छावनी की सड़क पर घूमने जाता था, जहां एक दिन मुझे सामयिक डिप्टी कमिश्नर कर्नल हार्कोर्ट साहब मिल गये। वे भी भ्रमण करने जाया करते थे। नित्य मेरा उनका साथ होने लगा। धर्म विषय पर बहुत बातचीत होने लगी क्योंकि कर्नल साहब स्वतन्त्र विचार वाले आस्तिक थे। एक दिन बातचीत में उन्हें मालूम हुआ कि मैं आर्य समाजी हूं। यह सुनते ही कर्नल हार्कोर्ट खड़े हो गये और बोले—"आप और आर्य समाजी! आप तो बड़े धार्मिक आदमी हैं। आप आर्य समाजी नहीं हो सकते।" मैंने उत्तर दिया कि मैं केवल आर्य समाजी ही नहीं प्रत्युत स्थानीय आर्य समाज का प्रधान भी हूं। तब साहब बोले—"परन्तु लाहौर आर्य समाज तो एक पोलिटिकल संस्था है, जालन्धर आर्य समाज चाहे न हो।"—तब मैंने कर्नल साहब को आर्य समाज के मन्तव्य तथा उद्देश्य समझाये और बतलाया कि हम लोग आर्य अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष बनाना चाहते हैं। इसका परिणाम यह हो सकता है कि श्रेष्ठों पर उनसे गिरे हुए पुरुष राज न कर सकें। इस पर साहब बड़े उदार भाव से बोले—"फिर हमारे यहां ठहरने का कोई उचित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेतु न रहेगा।"* उन्होंने कहा कि यदि भारतनिवासी हमसे अधिक श्रेष्ठ मनुष्य बन जावें तो फिर हमें स्वयं बोरिया बंधना उठा कर चल देना पड़ेगा।

उपर्युक्त घटना से पता लगता है कि उस समय भी हमारे गोरे हाकिम आर्य समाज को सन्देह की दृष्टि से देखते थे।

भीड़ जुटाने का अनोखा ढंग

तलवन में इन दिनों चिरञ्जीवलाल की बैंतुलबाजी की धूम रही। जालन्धर लौटते हुए रास्ते में नकोदर प्रचार हुआ। चिरञ्जीवलाल ही मेरा सब से बड़ा विज्ञापन था। वह इस प्रकार कि मुझे उस स्थान में बैठा कर, जहां मैं व्याख्यान देना चाहता, चिरञ्जीवलाल बाजार में चला जाता, जिस दूकानदार के ऊंचा मूढ़ा देखता वहीं खड़े होकर अपनी सिंहगरज से एक बैंत सुनाता, फिर कहता—"प्यारया, मूढा कुछ चिर लइदे तो होर बैंतां सुनावां।" वहां इनकार कब था, मूढ़े पर खड़े होकर बैंतों द्वारा लच्छेदार खण्डन होने लगा। जब ५० एक आदमी जमा हो जाते तो चिरञ्जीवलाल मूढ़ा उठा कर २० कदम आगे हो जाता और मूढ़े पर चढ़ कर फिर स्वर अलापता। जब १०० हो जाते तो पचास कदम आगे चल कर पिड़ जमाया। इसी प्रकार जन-संख्या बढ़ाते-बढ़ाते चार-पांच सौ मेरे सामने लाकर खड़े कर दिये और अपने श्रोताओं से कहा:—

"हुण विदवानां दियां गल्लां सुनो(देखो कहीं अमृत वर्खा हुँदी है" लोग सब बैठ गये और मेरा व्याख्यान प्रारम्भ हो गया।

कांग्रेस से मेरा सम्बन्ध

ज्येष्ठ १९४५ में पहिले पहिल मेरा सम्बन्ध नेशनल पोलिटिकल

---

* Then there will be no justification for us to stay here.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस के साथ हुआ। प्रयाग के पायोनियर और लाहौर के ट्रिव्यून का मैं बहुत पुराना ग्राहक हूं इसलिये नेशनल कांग्रेस के विषय में सब कुछ पढ़ता रहता था; किन्तु इस वर्ष, पहले पहल पंजाब में यह विचार हुआ कि कांग्रेस कमेटियां प्रत्येक जिले में बनाई जावें। हमारे मित्र कालीबाबू जालन्धर और होशियारपुर का ठेका लेकर हमारे पास पहुंचे। उन्होंने इसे भाजी वाला मामला बना लिया था। हमारे गाढ़े समय में वे आड़े आये थे, अर्थात् जालन्धर आर्य समाज के द्वितीय वार्षिकोत्सव पर जब सबने आने से इन्कार कर दिया था, तो बाहर के ये ही अकेले व्याख्याता थे। इसलिये अब अपने पोलिटिकल मिशन में हमसे सहायता मांगना उन्होंने अपना अधिकार समझा। ४ ज्येष्ठ, संवत् १९४५ (१८ मई १८८८ ईसवी) को दिन की बम्बई मेल से कालीबाबू जालन्धर पहुंचे। मेरी डायरी में लिखा है—"काली पोलिटिकल उद्देश्य लेकर यहां आया है, वह यहां कांग्रेस कमेटी स्थापित करना चाहता है। अपने साथ बांटने के लिये कुछ पैम्फलेट भी लाया है। काली विचित्र आदमी है—इसके काम का ठीक मैदान यही राजनैतिक आन्दोलन प्रतीत होता है। धर्म-सम्बन्धी काम उसके अनुकूल नहीं। बालक राम जी भी आ गये और हम सब नैश्नल कांग्रेस कमेटी के स्थापन करने के साधनों पर विचार करते रहे। एक बजे रात के एक आदमी आया और काली को होशियारपुर ले गया।" ५ ज्येष्ठ (१९ मई) को होशियारपुर में कमेटी बना कालीबाबू ६ ज्येष्ठ (२० मई, आदित्यवार) को जालन्धर लौट आये और आर्यमन्दिर में उपदेश दिया। उसी दिन से मैं और बालकराम जी कालीबाबू को उनके मिशन में कृतकार्य करने की चिन्ता में लगे। ७ ज्येष्ठ (२१ मई, सोमवार) को कालीबाबू ने फिर समाजमन्दिर में व्याख्यान दिया। फिर तो उनकी सहायता में सिर तोड़ प्रयत्न हुआ और एक बड़े आदमी की नयी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी में १० ज्येष्ठ (२४ मई, महारानी विक्टोरिया के जन्मदिवसपर) को एक बड़ी सभा बैठी। और जगहों में तो रईस लोग कांग्रेस का नाम सुनकर कानों पर हाथ धरते थे, किन्तु लाला बालकराम के प्रेरे हुए जालन्धर के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल कमिश्नर, जमींदार, सेठ साहूकार सभी कांग्रेस कमेटी की बुनियाद डालने के लिये इकट्ठे हो गये। कांग्रेस के उद्देश्यों के साथ सहानुभूति के प्रस्ताव खान बहादुर फज़ल करीम खां साहब वाइस प्रेसिडेण्ट, म्युनिसिपलिटीने पेश किया जिसका समर्थन सनातनधर्म सभा के प्रधान लाला हरभजराय जी आनरेरा मॅजिस्ट्रेट ने किया। इसी प्रकार वकीलादिकों को अलग रखकर बालकराम जी ने रईसोंसे ही सारा काम कराया। मैंने दूसरे ही दिन इस अधिवेशन की रिपोर्ट लिखकर 'ट्रिब्यून' के लिये भेजी जो मुख्य लेखके स्थान में छपी और सारे पञ्जाब में जालन्धर के जल्से की धूम मच गयी। किन्तु जिस मकान में दिनको हमारा जलसा हुआ था उसके विषय में मेरी डायरी में लिखा है--

"रातको उस मकान के अन्दर शराबियों में खूब जूतम पैज़ार हुई। वाह! कांग्रेस की मीटिङ्ग का कैसा शुभ परिणाम निकला!"

इससे पता लगेगा कि उस समय भी राजनीति को धर्म के प्रभाव से अलग करना मैं अधर्म समझता था।

कांग्रेस के विरुद्ध सर सय्यद अहमद का फतवा

१७ ज्येष्ठ, संवत् १६४५ (३१ मई सन् १८८८ ई०) के 'ट्रिब्यून' में कांग्रेस सम्बन्धी सम्मेलन का हाल छप गया। वकीलों के कमरे में धूम मच गयी। उन दिनों सर सय्यद अहमद का व्यवस्था-पत्र कांग्रेस के विरुद्ध निकल चुका था। जालन्धर में भी एक अलीगढ़-पार्टी खड़ी हो गयी थी जिसके मुख्य नेता वहां के एक नये मुंड़े हुए वकील थे। इनके बाप दादा ने कभी गो-मांस का स्पर्श भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया था, किन्तु अलीगढ़ के पक्षपात का पहिला परिणाम यह हुआ कि इन्होंने गो-मांस खाया। किन्तु सृष्टि-नियम भी विचित्र है; गो-मांस खाते ही इनके हृदय-शूल उठा और उनके घर वालों ने भी उस शूल को पाप का फल बतलाया—अस्तु। अलीगढ़-पार्टी को कांग्रेस पार्टी वालों ने खूब छेड़ना शुरू किया; परिणाम यह हुआ कि अलीगढ़ियों ने सब मुसल्मान सभ्योंको, दोके अतिरिक्त, कांग्रेस के पक्ष से जुदा कर लिया।

कन्या महाविद्यालय जालन्धर की कथा

उसके संस्थापन की कथा बहुत ही साधारण किन्तु शिक्षाप्रद है। जिस समय का मैं वृत्तांत लिख रहा हूं उस समय जालन्धर में एक पहाड़ी वृद्धा स्त्री रहती थी, जिसे 'माईलाड़ी' कहकर लोग पुकारते थे। जो कुछ भी अक्षराभ्यास हिन्दी का महिलाओं को था, वह इसी माई की कृपा का परिणाम था। मेरी धर्मपत्नी ने भी इसी माई से कुछ पढ़ा था। इस माई को कुछ विशेष लालच देकर ईसाइयों ने अपनी पुत्री पाठशाला में रख लिया। यह अपनी शिष्या स्त्रियों की लड़कियों को लिहाज़ मुलाहज़े के दबाव से ईसाई पुत्री पाठशाला में ले जाया करती थी। इसी प्रकार मेरी बड़ी पुत्री को भी उन्हीं की पाठशाला में बैठाया गया। २ कार्तिक, संवत् १९४५ (१९ अक्टूबर १८८८) की डायरी में लिखा है--

"कचहरी से लौटकर जब अन्दर गया, तो वेदकुमारी दौड़ी आयी और जो भजन पाठशाला से सीखकर आयी थी, सुनाने लगी— "इकबार ईसा, ईसा, बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रसिया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया"—इत्यादि। मैं बहुत चौकन्ना हुआ तब पूछनेपर पता लगा कि आर्यजातिकी पुत्रियों को अपने शास्त्रों की निन्दा भी सिखायी जाती है। निश्चय किया है कि अपनी पुत्री पाठशाला अवश्य खोलनी चाहिये।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे दिन आदित्यवार था। आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन में रायबहादुर बख्शी सोहनलाल प्लीडर भी सम्मिलित थे। हम दोनों घर को इकट्ठे लौटे। मैंने बख्शीजी से आर्यपुत्री पाठशाला की बात छेड़ी, वे पहिले ही से तैयार मिले क्योंकि उनको भी पता लग चुका था कि उनकी लड़की को क्या पढ़ाया जाता है। फिर क्या था. मैंने उसी रात बैठकर एक अपील लिखी और दूसरे दिन से ही चन्दा लिखाना शुरू हो गया। मेरी डायरी से पता लगता है कि मध्य कार्तिक (अक्टूबर के अन्त) तक मैं बराबर चन्दा इकट्ठा करता रहा। १७ कार्तिक (३ नवम्बर, दिवाली) को ऋषि दयानन्द का मृत्युदिवस था। मैंने उसी दिन प्रातःकाल अपने घर में बृहत् हवन कराया। ४० महाशय उपस्थित थे। वहां कन्या पाठशाला के लिये फिर अपील की गयी। रात को समाज-मन्दिर में ऋषि दयानन्द के जीवनपर मैंने ही व्याख्यान दिया। इन्हीं दिनों एक दूसरे बड़े लाभ की बुनियाद डालने का विचार उपस्थित हुआ। धर्म-सेवा के लिये जहां अन्दर से उत्साह उत्पन्न होने लगा वहां साथ ही साथ साधन भी प्राप्त होने लगे। इन्हीं दिनों में से, एक दिन राजमजदूरों को साप्ताहिक वेतन बांटना था, पास फूटी कौड़ी न थी। बड़ी चिन्ता में था कि तीसरे पहर तक १३०) की आमदनी हो गयी। मेरी डायरी में लिखा है—

"मनुष्य को कभी निराश न होना चाहिये, परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रखना चाहिये।"

मुझे इन दिनों अपने विचार सर्वसाधारणतक पहुंचाने के लिये किसी साधन की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। आवश्यकता प्रतीत होते ही परमात्मा ने मार्ग दर्शा दिया।

पं० गुरुदत्त का व्याख्यान और हुक्का त्याग

सब से बढ़कर पंडित गुरुदत्त का व्याख्यान था जिसके विषय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मेरी डायरी में लिखा है—"इस व्याख्यान की क्या उपमा दूं ? ऋषि दयानन्द के उपदेशों के पश्चात् यही एक व्याख्यान सुनने में आया है।"—यह उत्सव इसलिये भी स्मरणीय रहेगा कि मैंने पहिले पहल पंडित गुरुदत्त के व्याख्यान के पश्चात् ६ मार्गशीर्ष, संवत् १६४५ (२५ नवम्बर १८८८) के ११ बजे से हुक्का पीना छोड़ दिया था। १० मार्गशीर्ष (२६ नवम्बर) की डायरी में लिखा है कि सारा दिन तम्बाखू नहीं पिया। ११ मार्गशीर्ष (२७ नवम्बर) को लिखा है—"तम्बाखू छोड़ने से बड़ा लाभ होगा। अभी पता लगता है कि बहुतसी सुस्ती दूर हो गयी।"—इसके कुछ दिन पीछे भूख अधिक लगने का लेख है।

पुराने आर्यों में धर्म प्रचार की धुन

जब कभी मैं नवयुवक आर्य समाजियों से पुराने समय, अर्थात् सम्वत् १९५१ (सन् १८९४) की धर्म तथा सदाचार में श्रद्धा का वर्णन करता हूँ तो उनके मुख पर अविश्वास के से चिन्ह दिखायी पड़ते हैं और कोई कोई तो स्पष्ट कह देते है कि उस समय सब ढकी ढकाई बात थी इसलिये वह पुराना समय स्वर्गीय ज्ञात होता है। किन्तु मेरा अनुभव यही है कि जिस समय का मैं वर्णन कर रहा हूँ उस समय कम से कम जालन्धरी आर्यों में श्रद्धा की मात्रा बहुत बढ़ी हुई थी। यह स्वयं सिद्ध सचाई है कि जिस समय आराम लेकर सब इन्द्रियां स्वस्थ होती हैं उस समय (ब्राह्म मुहूर्त में) मनुष्य के आत्मा पर बुराई वा भलाई दोनों का प्रभाव प्रबल पड़ता है।

इसी सचाई को अपना पथदर्शक मान कर कुछ जालन्धरी आर्य हाथों में एकतारा ले चार बजे प्रातः घर से निकलते और आशा के शक्तिदायक अलाप के साथ वैराग, श्रद्धा, भक्ति और ईश्वर-स्तुति के भजन गाना आरम्भ करते थे। हमारे काम का ढंग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह था कि एक मुहल्ले वा गली के बीचोबीच खड़े होकर एक भजन पूरा करते और एकतारा पर स्वर छेड़ते आगे चल देते। जहां तक मुझे याद है पांच वर्षों तक हम लोग अपने वार्षिकोत्सव से डेढ़ दो महीने पहिले ऐसा ही अमल करते थे। कई बार हमारे साथ लाहौर ब्राह्मसमाज के प्रसिद्ध सभासद लाला काशीराम तथा बाबू अविनाश-चन्द्र मजूमदार भी सम्मलित हुआ करते थे। प्रातःकाल के हरिकीर्तन के समय भी कभी कभी विचित्र घटनाएं होतीं। कभी किसी माता को कहते सुनता--'बेचारा बड़ा भला फकीर है, केवल भजन गाता है, मांगता कुछ नहीं' और जब फिर दर्वाजा खोलकर उसके निकलते निकलते मैं चल देता तो आवाज आती--"ऐ भाई! खैर लेजा!" किन्तु जब मैं लौट कर भीख के लिये आंचल फैलाता, तो देवी को विस्मित देख कर बतला देता कि मैं आर्यसमाज का भिक्षु हूं और इसलिये फेरी डालता हूं कि नर नारी धर्म-पिपासा बुझाने के लिये आर्य-मन्दिर में एकत्र हों। कई देवियां तो हमें भिखमंगे समझ कर ही अनाज, पैसा, दुअन्नी, चौअन्नी, आंचल में डाल जातीं। मुझे याद है कि एक सवेरे की भीख की कमाई १०) से कुछ अधिक मैंने उत्सव-निधि में दी थी। वे दिन कैसे स्वच्छ और सुन्दर थे, और उन्होंने मेरे आत्मा की उन्नति में क्या किया, उसे स्मरण करके कभी कभी हृदय मुग्ध हो जाता है और मुझे पश्चात्ताप होता है कि ऐसी शान्तिदायक सेवा से पृथक् होकर क्यों पत्थरों से टकराने का कठिन काम पकड़ लिया।

पं० गुरुदत्त द्वारा कांग्रेस की व्याख्या

१३ पौष (२८ दिसम्बर) को प्रातःकाल ही सब स्वामियों को देवराज जी अपने यहां ले गये किन्तु पण्डित गुरुदत्त जी लाला बालकराम को साथ ले मेरे यहाँ पहुंचे। वहां से दुग्धपान करके एक बड़ा चक्कर काटते हुए हम तीनों लाला देवराज के मकान को चल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिये। बालकराम जी को प्रश्नों द्वारा दूसरों की सम्मतियां जानने का बहुत अभ्यास था। बहुत से अन्य प्रश्नों के पश्चात् आपने पूछा–"पण्डित जी! नैश्नल कांग्रेस के बारे में आपको क्या राय है? पण्डित जी चलते चलते खड़े हो गये और बोले "नैश्नल कांग्रेस के बारे में मेरी क्या राय है? अच्छा, एक बड़े मैदान में लकड़ियों का एक ढेर लगाइये और उनमें आग लगा दीजिये। उस ढेर के चारों ओर ऊंचे मीनारों पर पानी के नल लगा दीजिये। फिर एक ओर तो भड़की हुई आग में इन्धन डालते जाइये और दूसरी ओर पानी के नलकों में से सीधी धारा उस ज्वाला पर छोड़ते जाइये। यह है नैशनल कांग्रेस, जिसका उद्देश्य कांस्टिटयुश्नल एजिटेशन (वैध आन्दोलन) है।"

वकील और पुण्यात्मा

१४ पौष (२९ दिसम्बर) के सवेरे की दो घटनाएं मुझे याद हैं। भाई देवराज के कचहरी वाले कमरे में तीन खिड़कियों वाले ऊंचे चबूतरे पर संन्यासी मण्डल बैठा हुआ है और उस बड़े दालान के एक ओर एक चारपाई पर पण्डित गुरुदत्त जी लेटे हुए हैं। उनका एक चेला (चौधरी रामभजदत्त) चारपाई की पाटी पकड़े नीचे बैठा है। गुरु शिष्य में कुछ गोष्ठी हो रही है। अकस्मात् मेरा बुलावा होता है। "मुन्शीराम जी! इधर आइये" मैं जाकर चारपाई पर बैठ जाता हूं—"कहिये क्या आज्ञा है?" पण्डित जी ने प्रश्न पूछा—"सच कहिये, क्या एक आदमी वकालत करते हुए कन्सेन्शस (Conscientious, पुण्यात्मा) रह सकता है?" मेरे उत्तर में एक पलकी देर न थी—"मेरा अनुभव यह है कि नहीं रह सकता।" इस पर पण्डित जी ने अपने शिष्य से कहा—"देखो, जिनका तुमने दृष्टान्त दिया था, जब वे भी मानते हैं कि एक धार्मिक मनुष्य के लिये यह पेशा ठीक नहीं तो तुम मुख्तारी का ख्याल क्यों नहीं छोड़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते। तुम स्वयं शिक्षा ग्रहण कर कहीं शिक्षक बनो, इस प्रकार तुम सैकड़ों युवकों को सदाचारी बना सकोगे।" रामभजदत्त ने अपने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य समझकर सिर झुका दिया और उसी समय से मुझे इस युवक के साथ विशेष प्रेम होगया।

प्यारे गुरुदत्त! यदि तुम्हें अकाल मृत्यु का ग्रास न बनना पड़ता तो न जाने वीर रामभजदत्त सांसारिक प्रलोभनों से सुरक्षित किस उच्च पद को प्राप्त होता। किन्तु—होई है सोई जो राम रच राखा !!

कैसा स्वर्गीय समय था वह

पण्डित छज्जूराम जी वकील इसी समय आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए थे। वे चार पांच महीनों के पश्चात् ही आर्यसमाज से पृथक् हो गये किन्तु उनके बिछोड़े ने भी आर्यसमाज जालन्धर के गौरव का प्रमाण दिया। पण्डित छज्जूराम और सब सिद्धान्तों में तो आर्य-समाज के साथ सहमत थे परन्तु वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने में उन्हें संकोच था। उनका त्यागपत्र १० वैशाख, १९४६ विक्रमी के सद्धर्म प्रचारक में छपा है। शिक्षाप्रद होने के कारण मैं उसका अनुवाद यहां देता हूं—

"आप मेरा नाम आर्यसमाज के मेम्बरों के रजिस्टर में से खारिज कर दीजिये। संक्षिप्त कारण इस प्रार्थनापत्र का यह है कि मैं तीसरे नियम पर पूरे तौर पर विश्वास नहीं रखता और मैं यह नहीं चाहता कि जब तक मेरा पूरा विश्वास न हो, अपने आपको भी आक्षेपों का लक्ष्य बनाऊं और समाज की सुकीर्त्ति बढ़ाने का साधन होने के स्थान में उलटा प्रभाव डालूं। मैं यह भी प्रकट करना चाहता हूं कि यद्यपि एक नियम पर मेरा विश्वास नहीं है परन्तु मैं बहुत से अन्य विषयों में आर्यसमाज के सभासदों के साथ सहानुभूति रखता हूं, और रखता रहूंगा।"

कैसा स्वर्गीय समय था, जब इस प्रकार सचाई का राज्य था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कहां आज का समय कि दुराचारी और आपापन्थी आदमी भी मुंह छिपा कर समाज से पृथक् होने के स्थान में अपना जत्था खड़ा करके समाज में दन्दनाते और और उलटे कोतवाल को डांटने वाले चोर के सदृश समाज को कलंकित करते रहते हैं।

कृतकार्यता का मद

जालन्धर आर्यसमाज के तृतीय वार्षिकोत्सव की कृतकार्यता ने मुझे ऐसा उन्मत्त कर दिया कि कुछ दिनों तक सब आर्यसमाजी कामों से उदासीनता को मैंने अपना अधिकार समझ लिया। उन दिनों मेरे आत्मा का क्या आदर्श था, यह जतलाने के लिये मैं अपनी डायरी का अनुवाद नीचे देता हूं। अनुवाद इसलिये कि उस समय तक कालिजी शिक्षा का प्रभाव दूर नहीं हुआ था और मैं अंग्रेजी में ही डायरी रखने का अभ्यासी था।

"ओ३म्—अब सन् १८८९ का आरम्भ है। पहले महीने (जनवरी) के २५ दिनों तक मैंने वास्तव में कुछ नहीं किया—कुछ भी नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे समाज ने जो कृतकार्यता इस उत्सव में प्राप्त की है उसने मेरी शक्तियों को सर्वथा शिथिल कर दिया। इस वर्ष हमारे समाज पर परम पिता परमात्मा की बड़ी कृपा हुई है। उसके अनुग्रह के आधिक्य ने मुझे विवश कर दिया। यह आश्चर्य की बात है कि हमसे पापियों का स्थापन किया हुआ समाज उन्नत हो रहा है। किन्तु जब सोचता हूं कि उसी परम पिता का सच्चा अनुग्रह है तो आश्चर्य दूर हो जाता है।

हे प्रभु! मुझे सर्वप्रकार की पाप कामनाओं से बचाइये; मुझे सत्य की ओर ले चलिये और वह मेधा प्रदान कीजिये जिसकी खोज में प्राचीन ऋषि कई जीवन अर्पण कर देते थे। हां, सचमुच उत्सव की कृतकार्यता ने मुझे शिथिल कर दिया था, जिससे मैंने आज सायंकाल ही मुक्ति उपलब्ध की है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मनोरंजक गप्प

१६ माघ सम्वत् १६४५ (१ फरवरी १८८६) के दिन जालन्धर में गप्प उड़ी कि सनातनधर्म महामण्डल का लाहौर में बड़ा विजय हुआ है। आर्यसमाज के व्याख्यान बन्द कर दिये गये हैं। जब अपने सभासदों के लाये हुए इस समाचार पर मुझे विश्वास न आया तो दूसरे दिन वे एक जालन्धर के अनपढ़ ब्राह्मण को ले आये जिसने आंखों देखी साक्षी इस प्रकार दी—

"कमिश्नर साहब ने आर्यों ते सनातना पण्डितां नूं बुला के शास्त्रार्थ कराया सी। खलकत बेशुमार सी। मैं वी सब कुछ देखदां ते सुणदां सी। दुहां पासियां दी गल्लां सुण के कमिश्नर साहब ने आख्या कि आर्यसमाज मञ्जूर नहीं, हमान्नूं सनातनधर्म मंजूर है।"

इस बेतुकी हांकको सुन कर मुझे तो हंसी छूटी किन्तु हमारे सभासद मेरे पीछे ही लगे रहे। तब उसी रात की रेल में मैं लाहौर चला गया। वहां का हाल मेरी २१ माघ (३ फरवरी, की वृत्तान्त-पञ्जिका में इस प्रकार लिखा है :—

"साढ़े सात बजे समाज मन्दिर में पहुंचा। वहां चिरञ्जीव भी था। वहां पता लगा कि जो किम्बदन्तियां फैलायी गयी थीं और जो कुछ 'कोहनूर' में निकला था वह सब गप्प है। उसी समय सनातन मण्डल के उत्तर में बाबू मुन्नालाल और स्वामी स्वात्मानन्द जी के व्याख्यान हुए। तब एक बड़े विद्वान् संन्यासी स्वामी महानन्द जी ने अपनी सेवा आर्यसमाज के अर्पण की। स्वामी जी के बहुत साधु शिष्य हैं और उनकी विद्या की पण्डित गुरुदत्त ने स्वयं प्रशंसा की। उस समय २० अन्य महाशयों ने समाज में प्रवेश के लिये प्रार्थना-पत्र दिये। यह भी सुनाया गया कि ३५ नये सभासद पहिले प्रविष्ट हो चुके हैं। उस समय उत्साह की लहर चल रही थी। सभा ११ बजे विसर्जित हुई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती पुस्तकालय

ला० देवराज को देश निकाला

१४ माघ (२७ जनवरी) को आदित्यवार था। उस दिन के वृत्तान्त में अपने साप्ताहिक अधिवेशन में सम्मिलित होने का हाल लिखते हुए मैंने लिखा था—

"देवराज ने 'सत्य' पर बड़ा उत्तम और शिक्षाप्रद व्याख्यान दिया। आजके व्याख्यान में कुछ विशेष बल था।" मुझे स्मरण है कि उन दिनों देवराज जी पर धर्म का एक विशेष रङ्ग चढ़ा हुआ था। शायद यह व्याख्यान किसी आने वाली घटना की सूचना थी। देवराज जी के पिता ने उन्हें स्पष्ट लिख दिया था कि यदि आर्यसमाज का प्रचार करना है तो बर्मा आदि की ओर चले जायें, जालन्धर में रह कर अपने पिता को मित्रों से उलाहना न दिलायें। देवराज जी के सुपुर्द अपने परिवार की रियासत का खजाना था, परन्तु उन्होंने सब हिसाब ठीक करके अपने निज जेब खर्च के डेढ़ सौ रुपये लिये और बर्मा जाने के लिये कलकत्ते चल दिये। तब पिता को होश आया और उन्होंने आदमी भेज कर उन्हें लौटा मंगाया। उधर मैंने नित्य किसी न किसी पास के ग्राम में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया। इससे राय शालिग्राम जी को भी पता लग गया कि आर्यसमाज के प्रचार का काम किसी विशेष व्यक्ति पर ही निर्भर नहीं है।

देवराज जी के इस अपूर्व साहस का परिणाम यह हुआ कि धर्म के कार्यों में उनके रास्ते की रुकावटें दूर हो गयीं। पिता जी की दृष्टि में उनका गौरव बढ़ गया और वे बेधड़क काम करने लग गये।

एक मनोरंजक वार्तालाप

इस सम्बन्ध में एक कहानी बड़ी मनोरञ्जक है जिससे पं० गुरुदत्त की अपूर्व वाक् चातुरी का पता लगता है। एक बार एक एम. ए. महाशय, जो एक बड़े सरकारी पदाधिकारी थे और साथ ही प्रेमचन्द,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायचन्द स्कालर भी श्री पंडित गुरुदत्त के पास आकर बोले---"पंडित जी ! आयुर्वेद का क्या बनाओगे ? सुश्रुत में तो मांस-भक्षण की खुली आज्ञा है।" उत्तर मिला --' कुछ है तो, परन्तु क्या आप सुश्रुतके उपदेशानुसार आचरण करोगे ?" एम० ए० महाशय चकित होकर पूछने लगे—"क्या आप मांस भक्षण को ठीक मानने लग गये ?" उत्तर मिला—"मैं ठीक मानने लगा या नहीं, इससे कुछ प्रयोजन नहीं। परन्तु यदि मांस खाना हो तो उत्तम ही खाना चाहिये। सो सबसे उत्तम मांस मनुष्यका मांस ही है। मनुष्यों में से भी यदि एम.ए. का हो तो अत्युत्तम, और फिर यदि प्रेमचन्द रायचन्द स्कालर का कहीं मिल जाय, तो सोनेपर सुहागा। अतीव उत्तम भोजन होगा।" एम०ए० महाशय नमस्ते कहकर रफूचक्कर हो गये।

मैं सन्तुष्ट नहीं हूँ

२७ पौष संवत् १६४७ (११ जनवरी, १८६१) की डायरी में लिखा है—

"मैं अपने गत दो वर्षों के जीवन से सन्तुष्ट नहीं हूँ, यद्यपि मैंने उस बीच में आर्यसमाज की बहुत सेवा की है। मैंने लगभग अकेले ही "सद्धर्मप्रचारक" का सम्पादन किया है, वर्ण-व्यवस्था पर एक ट्रैक्ट लिखा है, कुछ शास्त्रार्थ भी किये और बहुत से व्याख्यान वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दिये। परन्तु क्या मेरी आत्मिक अवस्था में वास्तविक उन्नति हुई है ?

हे हमारे मनों को जानने वाले ! तू ही जानता है कि इस दिखावे में कैसी अपवित्र चेष्टायें छिपी हुई हैं। हे प्राणेश्वर ! मुझे बल दो कि मैं धर्म-मार्ग पर चल सकूं और सत्य पर दृढ़ रहूँ।"

उस समय के लेखों से ज्ञात होता है कि वकालत छोड़ने के लिये हृदय में हलचल मच चुकी थी। १२ जनवरी १८६१ ई०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२८ पौष १९४७) की डायरी में एक महन्त के दुराचार का हाल लिखकर और संन्यासाश्रम की दुरवस्था का वर्णन कर लिखा है— "इस प्रकार की घटनायें जतलाती हैं कि मातृभूमि के पुनरुद्धार के लिये बड़े तपयुक्त आत्मसमर्पणकी आवश्यकता है।"—उसी दिन कचहरी में जाने का हाल लिखा है—"बार-रूम (वकीलों के कमरे) में वकील भाइयों के साथ इस पेशेके धर्माधर्म विषय में बातचीत हुई। मैं बार २ अपने आत्मा से प्रश्न कर रहा हूँ कि वैदिक धर्मकी सेवा का व्रत धारण करते हुए क्या मैं वकील रह सकता हूँ। मार्ग क्या है, कौन बतलायगा? अपने स्वामी परम पिता से ही कल्याण-मार्ग पूछना चाहिये। यह संशयात्मकता ठीक नहीं। अपने देश तथा धर्म की सेवा के लिये पूरा आत्म-समर्पण करना चाहिये। परन्तु परिवार भी एक बड़ी रुकावट है। मैं संदिग्ध अवस्था में हूँ। कुछ निश्चय शीघ्र होना चाहिये। कृष्ण भगवान् ने कहा है—

"संशयात्मा विनश्यति" पिता! तुम्हीं पथ-दर्शक हो"।

मेरी पत्नी का अन्तिम संदेश

सहधर्मिणी के साथ मेरा शनैः शनैः अटूट सम्बन्ध हो चुका था। शिवदेवी जी से कभी बिछुड़ने का ख़याल तक न आता था और उन्होंने "वैदिक संस्कार-विधि" का पाठ करके यह धारणा दृढ़ की थी कि पति से कभी वियोग न होना चाहिए। श्रावण के अन्त (अगस्त के मध्य भाग) में उन्हें पांचवीं सन्तान उत्पन्न होते समय बड़ा कष्ट हुआ। चिकित्सककी सहायता ली गयी। लड़की का जन्म लेते ही देहान्त हो गया। देवी इससे बहुत निर्बल हो गयी। धर्मशाला पर्वत के आर्य-समाज से वार्षिकोत्सव के लिए निमन्त्रण आया था। निश्चय कर लिया कि १५ भाद्रपद (३१ अगस्त) को परिवार सहित धर्मशाला के लिए कूच होगा। मैं क्या सोच रहा था और कर्मानुसार उधर कुछ और तय्यारी हो रही थी।..........

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे देवी बाबू जी कहकर सम्बोधन किया करती थीं। ४॥ बजे मैं बाहर डॉक्टर से कुछ सलाह करने गया। २० मिनिट पीछे बुलावा हुआ। मुझे देखते ही दो बार कहा—"बाबू जी ? बाबू जी !" मैंने झुककर नब्ज हाथ में ली। लब हिलते थे। एक बार स्पष्ट "ओ३म्" का उच्चारण मैंने सुना और फिर माता की गोद में प्राण त्याग दिये।.........

दूसरे दिन प्रातः मैंने देवी का सामान संभालना शुरू किया। बड़ी पुत्री ने कलमदान बतलाया—"माता जी ने एक कागज लिख कर इसमें रक्खा था।" मैंने कागज निकाला। उसमें लिखा था—

"बाबू जी ! मैं अब चली। मेरे अपराध क्षमा करना। आप को तो मुझसे अधिक रूपवती और बुद्धिमती सेविका मिल जायगी, परन्तु इन बच्चों को कभी मत भूलना। मेरा अन्तिम प्रणाम स्वीकार करो !"

यह उन पंजाबी वाक्योंका अनुवाद है जो देवी ने देवनागरी अक्षरों में लिखे थे। वे वाक्य मेरे हृदयपर अंकित हो गये। रात को सब बच्चों को सुलाकर, मैंने एक घण्टे तक परमात्मा से बल के लिये प्रार्थना की और यह दृढ़व्रत धारण किया कि बच्चों के लिए माता का स्थान भी मैं ही पूरा करूंगा। यह मेरे वर्तमान बच्चे बतला सकते हैं कि मैंने अपने इस संकल्प को कहाँ तक पूरा किया है।

इसमें सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द के उपदेशों और वैदिक धर्म के आदेशों ने सम्बन्धियों, मित्रों और हितचिन्तकों के, सामने धरे प्रलोभनों से मुझे बचाया, परन्तु देवी के अन्तिम सन्देश ने मेरे अन्दर मातृभाव का संचार करके मुझे इस योग्य बना दिया था कि मैं गुरुकुल का आचार्य बन सकूं जहां वेदाज्ञाके अनुकूल आचार्यको माता और पिता दोनों का स्थान पूरा करना पड़ता है।

—: ❀ :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय योग्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

१. वैदिक ज्ञान भण्डार का मूल
२. हैदराबाद में आर्यसमाज का सं
३. स्वराज्य संग्राम में आर्यसमाज
४. ईसाइयों के ख़ूनी कारनामे नेहरु
५. सत्यार्थप्रकाश १।=) २१
६. ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका २॥) २२
७. संस्कार विधि १।) २३
८. मनुस्मृति ४) २४
९. म० दयानन्द सरस्वती ॥।=) २५ ।
१०. यजुर्वेद भावार्थप्रकाश ॥।=) २६. भरत का शपथ)१०
११. वेदमन्त्रों के उपदेश ॥) २७. ऋषियों के उपदेश)१०
१२. सांख्य दर्शन १) २८. पादरी भाग गया -)
१३. विदुर प्रजागर १) २९. गायत्री विचार =)
१४. भरथरी नीति शतक ॥) ३०. भोज प्रबन्ध १।)
१५. व्यवहार भानु १५न०पै० ३१ बनियरकी भारत यात्रा३॥)सैं.
१६. आर्यसमाज क्या है ? ।-) ३२. वैदिक योगामृत ॥=)
१७. आर्य नेताओं के व्याख्यान ≡) ३३ पुरुषार्थ करो १॥) सैं०
१८. ऋषिकी न सुननेका फल -) ३४. स्वर्ग में प्रेस कान्फ्रेन्स ।=)
१९. उपनिषद् सुधासार २।) ३५. ब्रह्मचर्य साधन ४) सैं०
२०. नेहरू जी की विचारधारा ।) ३६. कर्त्तव्य दर्पण १।)
३७. स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश १॥) सैं०
३८. राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन १)
३९. स्वामी श्रद्धानन्द की डायरी से)४० नया पैसा
४०. उदारतम आचार्य दयानन्द ।=)
४१. प्रजापालन)५ ४३. पूजा किसकी)३
४२. ऋषि अर्चन =) ४४. आर्य समाज)५
४५ ऋषि दयानन्द प्रकाश =)
४६. यदि आचार्य चाणक्य प्रधानमन्त्री होते ? ५) सैं०

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, दिल्ली ७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.